सम्पादक
हारून रशीद
सहायक
मु0 गुफ़रान नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ – 226007
फोन : 0522–2740406
E-mail: sachcharahi2002@gmail.com
www.nadwatululema.org

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 30/-
वार्षिक	₹ 300/-
विदेशों में (वार्षिक)	50 युएस. डॉलर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
SACCHA RAHI

SACCHA RAHI
A/c. No. 10863759642
IFS Code: SBIN0000125
Swift Code: SBINNB157
State Bank of India,
Main Branch, Lucknow.

कृप्या पैसा जमा करने के बाद दफ़्तर के फोन नम्बर अथवा ई–मेल पर खरीदारी नम्बर के साथ अवश्य सूचित करें।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक लखनऊ

मई, जून 2020 वर्ष 19 अंक 03,04

पूज्य बस अल्लाह है

हे प्रभु आनन्द दाता ज्ञान हम को दीजिए
शीघ्र सारे दुर्गुणों को दूर हमसे कीजिए
लीजिए हमको शरण में हम सदाचारी बनें
स्वाभिमानी धर्मरक्षक वीर व्रतधारी बनें
ज्ञान और विज्ञान सीखें कुछ कला भी सीख लें
अपनी मेहनत ही से रोज़ी हम कमाना सीख लें
पूज्य केवल एक है औरों की पूजा ना करें
पूज्य वह अल्लाह है औरों की पूजा न करें
अल्लाह के अन्तिम नबी हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा
रहमतें उन पर हों या रब और सलाम उन पर सदा।

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा ख़त्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। आप अपना पैसा दिये गये बैंक खाते में भी जमा कर सकते हैं। अथवा मनीआर्डर से भी भेज सकते हैं। मनीआर्डर के कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर के साथ मोबाइल नम्बर अवश्य लिखें।

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रिंटिंग प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर सच्चा राही नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग, लखनऊ से प्रकाशित।
Designing & Editing by: Qamaruzzama-9452295052

विषय एक दृष्टि में

कुर्आन की शिक्षा	मौ0 बिलाल अब्दुल ह़यी हसनी नदवी	05
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	07
रमज़ानुल मुबारक का महीना	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी	09
इस्लाम के तीन बुन्यादी अक़ायद	हज़रत मौ0 अबुल हसन अली नदवी रह0	10
खिलाफते राशिदा	मौलाना गुलाम रसूल मेहर	13
रमज़ानुल मुबारक	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी	16
तालीम ही तरक़्क़ी की	मौलाना सय्यिद मुहम्मद हम्ज़ा हसनी नदवी	19
रमज़ानुल मुबारक के फ़ज़ाइल	ह0 मौ0 मु0 अब्दुश्शकूर फ़ारूक़ी रह0	20
वालिदैन के हुकूक (पद्य)	अब्दुल रशीद सिद्दीक़ी, रायबरेली	24
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती ज़फ़र आलम नदवी	25
ताक़त व कूव्वत का गुरूर	मौलाना डॉ0 सईदुर्रहमान आज़मी नदवी	29
ईदुलफित्र, रोज़ा खोलने की खुशी	इदारा	31
लॉकडाउन और हमारी ज़िम्मेदारी	मौलाना जुबैर अहमद नदवी	33
क्रोना को या रब (पद्य)	इदारा	34
रहम दिली	मौलाना नजमुस्साकिब अब्बासी नदवी	35
तबलीग़ी जमात– बुरी नहीं: मगर	डॉ0 हैदर अली खाँ	37
मधुमक्खियों के शरीर	अबरार अहमद	38
अत्याचार से बड़े–बड़े शासकों	हज़रत मौ0 अबुल हसन अली नदवी रह0	40
अहले ख़ैर हज़रात से	इदारा	41
उर्दू सीखिए	इदारा	42

क़ुआंन की शिक्षा

—मौलाना बिलाल अ़ब्दुल ह़यी हसनी नदवी

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

सूर-ए-अल आ़राफ़ :

अनुवाद–

अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालू है।

अलिफ़—लाम—मीम्—सॉद(1) किताब आप पर उतारी गई है ताकि आप उसके द्वारा लोगों को खबरदार करें तो आप इससे अपने मन में कोई तंगी महसूस न करें[1] और यह ईमान वालों के लिए नसीहत की चीज़ है(2) तुम्हारे पालनहार की ओर से तुम पर जो कुछ उतरा है उसी पर चलो और उसके अलावा और दोस्तों की बात मत मानो, कम ही तुम ध्यान देते हो(3) और कितनी ही बस्तियाँ हमने तबाह कर डालीं तो हमारा अज़ाब रातों रात या दोपहर को सोते में वहां आ पहुंचा(4) फिर जब उन पर हमारा अज़ाब आ गया तो सिवाए इस इक़रार के उनसे कुछ कहते न बना कि हम ही अत्याचारी थे(5) तो हम अवश्य उनसे भी पूछेंगे जिन के पास पैग़म्बर भेजे गए और हम पैग़म्बरों से भी पूछेंगे[2](6) फिर हम अपने ज्ञान से सब कुछ उनको सुना देंगे और हम गायब तो थे नहीं(7) और वज़न उस दिन ठीक ठीक होगा फिर जिनके तराजू वज़नी रहे तो वही लोग हैं जिन्होंने अपना नुकसान किया इसलिए कि वे हमारी निशानियों के साथ न्याय नहीं करते[3]थे(9) और हम ही ने तुम्हें धरती में नियंत्रण दिया और उसमें तुम्हारे लिए जीवन—सामग्री बनाई, कम ही तुम शुक्र करते हो(10) और हम ही ने तुम को पैदा किया फिर तुम्हारी सूरतें बनाईं[4]फिर फरिश्तों से कहा कि आदम को सजदा करो तो सब ही ने सजदा किया सिवाय इबलीस के वह सजदा करने वालों में शामिल न हुआ(11) कहा कि मैंने तुझे आदेश दिया फिर तुझे सजदा करने में क्या रुकावट हुई, बोला मैं उससे अच्छा हूँ मुझे तूने आग से बनाया और उसे मिट्टी से बनाया[5](12) कहा यहाँ से उतर जा, यहाँ[6] तू घमण्ड नहीं कर सकता, बस निकल जा, बेशक तू अपमानित है(13) बोला उस दिन तक के लिए मुझे मुहलत दे दे जिस दिन लोग उठाए जाएंगे(14) कहा तुझे मोहलत है(15) बोला जैसा तूने मुझे गुमराह किया है मैं उनके लिए भी तेरे सीधे रास्ते पर बैठूँगा(16) फिर मैं उनके सामने से और उनके पीछे से और उनके दाएं से और उनके बाएं से उनके पास आ कर रहूँगा और तू उनमें अधिकतर को शुक्र करने वाला न पाएगा[7](17) कहा यहाँ से ज़लील व ख़्वार (अपमानित) हो कर निकल जा, जो कोई तेरी बात मानेगा मैं तुम सबसे दोज़ख को भर कर रहूँगा(18) और ऐ आदम! तुम और तुम्हारी पत्नी दोनों जन्नत में रहो जहाँ से चाहो खाओ पियो और उस पेड़ के निकट भी मत जाना वरना अन्याय करने वाले घोषित हो

जाओगे(19) फिर शैतान ने दोनों को बहकाया ताकि उनकी लज्जा की जगह जो उनसे छिपाई गई थी उन दोनों के लिए खोल दे और कहा तुम्हारे पालनहार ने तो तुम्हें इस पेड़ से इसलिए रोका है कि कहीं तुम फरिश्ते न हो जाओ या हमेशा रहने वाले न हो जाओ(20) और उन दोनों से उसने कसम खाई कि मैं तो तुम दोनों का सच्चा शुभ चिंतक हूँ(21) बस उसने धोखा दे कर दोनों को नीचे उतार[8] ही लिया फिर जब उन दोनों ने उस पेड़ में से खाया तो उनके शरीर का छिपा भाग उन पर खुल गया और वे दोनों जन्नत के पत्ते स्वयं पर जोड़ने लगे और उनके पालनहार ने उनको आवाज़ दी कि क्या मैंने तुम को इस पेड़ से रोका न था और यह बताया नहीं था कि शैतान तुम दोनों का खुला दुश्मन है(22)।

तफ़्सीर (व्याख्या):–

1. दुश्मनों के तानों, छेड़छाड़ और बेहूदा सवालों से आप घुटन महसूस न करें आपका काम तो डराते रहना है।

2. जिन उम्मतों (समुदायों) की ओर पैग़म्बर भेजे गए उनसे पूछा जाएगा ''माज़ा अजब तु मुलमुर्सलीन'' तुमने हमारे पैग़म्बरों की दावत (बुलावे) को कहाँ तक स्वीकार किया था और खुद पैग़म्बरों से पूछा जाएगा ''माज़ा अजिबतुम'' तुम्हें उम्मत (समुदाय) की ओर से क्या जबाब मिला?

3. खुद इंसान ने जो अल्लाह की मखलूक़ है ऐसी संवेदनशील तराजूवें बना दी हैं कि एक एक बिन्दू में तौला जा सकता है गर्मी और ठंढक को नापा जा सकता है तो अल्लाह तआला की तराजू का हाल क्या होगा जिसमें कर्मों को उनके गुणों के साथा तौला जाएगा।

4. मानव उत्पत्ति का उल्लेख करके उसकी प्रारंभिक उत्पत्ति का उल्लेख किया जा रहा है जब अल्लाह ने आदम के मिट्टी के पुतले को बनाया उसको रूप दिया, रूह फूँकी फिर फरिश्तों को सजदे का आदेश हुआ बेशक यह मानव जाति का बहुत ही बड़ा सम्मान था जो अल्लाह ने फरिश्तों से कराया।

5. उसने अपने ख़्याल से जल्द बाज़ी में यह बात कह दी जो उसके विनाश का कारण बनी, आग का गुण ही गर्मी, जल्दी, और बड़प्पन और बिगाड़ है इबलीस का मूल आग था सजदे का आदेश सुन कर भड़क पड़ा घमण्ड के रास्ते से ईर्ष्या की आग में गिर कर दोज़ख़ की आग में जा पड़ा, इसके विपरीत आदम अलैहिस्सलाम से भी गलती हुई तो मिट्टी के तत्व ने खुदा के सामने झुकने व विनम्रता की राह दिखाई अतः उनकी अडिगता व अल्लाह से संपर्क ने ''फिर उनके पालनहार ने उनको चुन लिया फिर उनकी ओर ध्यान दिया और हिदायत दी'' का परिणाम पैदा किया।

6. आसमानों में वही रह सकता है जो आज्ञाकारी हो।

7. यानी जैसे इस मिट्टी के पुतले की वजह से मैं दरबार से निकाला गया मैं भी उसकी संतान को हर ओर से बहकाऊँगा और ज़ियादातर को खुदा का बाग़ी बनाऊँगा और इबलीस का यह अनुमान सही था खुद अल्लाह तआला कहता है ''और इबलीस ने उन पर अपना अनुमान पूरा किया तो वे उसके पीछे हो लिए सिवाय ईमान वालो के एक गिरोह के।

8. यानी उनके बुलन्द मकाम से फिसला कर उनको नीचे उतार लिया।

❖❖❖

–प्रस्तुति–

जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

प्यारे नबी की प्यारी बातें

—अमतुल्लाह तस्नीम

रोज़े का अल्लाह के यहाँ दर्ज़ा:-

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है कि आदमी का हर अमल उसके लिए है और रोज़ा खास मेरे लिए है, मैं उसका बदला दूंगा और रोज़े ढाल हैं। अगर तुममें से कोई रोजे से हो तो न अशलील बके, न बेहूदा गोई करे, न झगड़ा करे अगर कोई उसको गाली भी दे या झगड़ा करने पर आमादा हो जाये तो कह दे कि मैं रोज़े से हूं, और क़सम है उसकी जिसके क़ब्ज़े में मुहम्मद की जान है कि रोज़ेदार के मुंह की बू अल्लाह को मुश्क से जियादा पसंद है और फरमाया कि रोजेदार को दो खुशियां हासिल होती हैं एक इफ्तार के समय जब कि वह रोज़ा खोलता है, दूसरी खुशी कियामत के दिन होगी जब वह अपने रब से मिलेगा और अपने रोज़े का बदला देखेगा।

(बुखारी—मुस्लिम)

रोज़े की रूह-

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जो शख्स रमजान में अज्र व सवाब और ईमान की खातिर रोज़े रखेगा तो उसके तमाम पिछले गुनाह बख़्श दिये जायेंगे।

(बुखारी—मुस्लिम)

रमज़ान की पहली रात-

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया रमज़ानुल मुबारक की पहली रात को जहन्नम के दरवाजे बंद कर दिये जाते हैं और शैतानों को बांध दिया जाता है।

(बुखारी—मुस्लिम)

सेहरी खाने की फजीलत-

हज़रत अनस रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया सेहरी खाया करो, सेहरी में बरकत होती है।

(बुखारी—मुस्लिम)

हजरत अम्र बिन अल आ़स रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया हमारे रोज़ों को अह्ले किताब के रोज़ों पर जो फज़ीलत हासिल है वह सेहरी की वजेह से है। (मुस्लिम)

इफ़्तार का बयान-

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया अल्लाह तआला को वह बंदे बहुत महबूब हैं जो इफ़्तार में जल्दी करते हैं। (तिर्मिजी)

हजरत सहल बिन सअ़द रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया लोग उस समय तक भलाई में रहेंगे जब तक इफ़्तार में जल्दी करेंगे। (मुस्लिम)

खजूर से इफ़्तार-

हज़रत सलमान बिन आमिर ज़िब्बी सहाबी रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया खजूर से इफ्तार करो अगर खजूर न मिले तो पानी से रोजा खोलो, पानी से इसलिए कि वह पाक करने वाला है।

(अबू दाऊद—तिर्मिजी)

हजरत अनस रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नमाज़ से पहले इफ़्तार कर लेते थे और ताज़े खजूर से इफ्तार फरमाते थे। अगर ताज़े खजूर न मिलते तो सूखे खजूर यानी छोहारे से रोजा खोलते थे और अगर यह भी न होते थे तो चंद घूंट पानी से रोज़ा इफ्तार फरमाते थे।

(अबू दाऊद–तिर्मिजी)

रोज़ेदार को ज़बान की हिफाजत का हुक्म–

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया रोज़ेदार को चाहिए कि रोज़े के दिन बेहयाई का काम न करे, न शोर करे, और अगर कोई उसको गाली दे या लड़ना चाहे तो कह दे कि मैं रोज़ेदार हूं।

(बुखारी–मुस्लिम)

हजरत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जिस शख्स ने झूठ बोलना और झूठी बात पर अमल करना न छोड़ा तो उसके खाना पानी छोड़ने की अल्लाह को कोई जरूरत नहीं। (बुखारी)

ऐतिकाफ व लैलतुल क़द्र –

हज़रत इब्ने उमर रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रमजान के आखिर के दस दिनों में ऐतिकाफ फरमाते थे।

(बुखारी–मुस्लिम)

हज़रत आयशा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ज़िन्दगी भर रमजान के आखीर अशरा में एतिकाफ फरमाते रहे और आपके बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बीवीयाँ ऐतिकाफ करती रहीं। (बुखारी–मुस्लिम)

हज़रत आयशा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रमजान के आखीर की दस रातों में ऐतिकाफ में बैठा करते थे और फरमाते थे कि रमजान की आखिर की दस रातों में शबे कद्र तलाश करो। (बुखारी–मुस्लिम)

हज़रत आयशा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रमजान के आखीर अशरा में पूरी रात जागते थे और अपने घर वालों को जगाते थे और इबादत के लिए कमर कस कर तैयार हो जाते थे।

(बुखारी–मुस्लिम)

शबे कद्र की खास दुआ –

हज़रत आयशा रज़ि0 से रिवायत है कि मैंने अर्ज किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अगर मैं शबे कद्र पहचान लूं तो उस वक़्त क्या दुआ मांगूं आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया यह कहो, *"अल्ला हुम्मा इन्नक अफुव्वुन तुहिब्बुल अफवा फाअ़फू अन्नी"* अनुवादः ऐ अल्लाह तू माफ करने वाला और माफी को पसंद करता है तू मुझे माफ कर दे। (तिर्मिजी)

रमजान की आखिरी रात–

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि रमजान की आखरी रात में आप की उम्मत के लिए मगफिरत और बख्शिश का फैसला किया जाता है आप से दरयाफ़्त किया गया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम क्या वह शबे कद्र होती है? आप ने फरमाया कि शबे कद्र तो नहीं होती, लेकिन बात यह है कि अमल करने वाला जब अपना अमल पूरा कर दे तो उसकी पूरी उजरत मिल जाती है। (मुस्नदे अहमद)

◆◇◆

–प्रस्तुति–

जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

शव्वाल का मुबारक महीना

—डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी

शव्वाल का महीना भी बड़ा मुबारक (शुभ) महीना है इसकी पहली तारीख़ को हम मुसलमान ईद मनाते हैं ईद का त्यौहार हम मुसलमानों का बहुत बड़ा और बड़ा मुबारक त्यौहार है ईद के दिन यानि पहली शव्वाल को रोज़ा रखना हराम (वर्जित) है इस दिन अल्लाह तआला की ओर से खाने पीने का आदेश है पहली शव्वाल के बाद शव्वाल के महीने में 6 रोज़े रखना मुस्तहब है अर्थात रखे तो बड़ा सवाब पायें न रखें तो कोई गुनाह नहीं ये 6 रोज़े चाहे लगातार रखें चाहे नाग़ा कर करके, रमज़ान के महीने में संयम (तक़्वा) प्राप्त करने का ख़ूब अभ्यास हुआ और जिसने जितने अच्छे रोज़े गुज़ारे उसको उसी लिहाज़ से संयम (तक़्वा) का भाग मिला तक़्वा बड़ी चीज़ है यूं तो सब मानते हैं कि अल्लाह तआ़ला सारे आलम को हर वक़्त देखता है और वह तो दिलों के अन्दर का हाल भी जानता है। लेकिन शैतान इन्सान को ऐसा अचेत (ग़ाफिल) कर देता है कि वह अल्लाह तआ़ला को भूल बैठता है और दुन्या में व्यस्त हो जाता है तक़्वे का अर्थ है कि इन्सान अल्लाह तआ़ला को हर समय ध्यान में रखे हर काम करते समय सोचे कि अगर ये अल्लाह तआ़ला का प्रिय है तो करे यदि अप्रिय है तो उसे छोड़ दे। अल्लाह तआला ने अपने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम द्वारा वह सारी बातें बता दी हैं जो उसको प्रिय हैं और वह बातें भी बता दी हैं जो उसको अप्रिय हैं तथा पवित्र कुर्आन द्वारा आदेश दे दिया कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तुम को जो दें वह ले लो और जिससे मना करें उस से रुक जाओ पस रमज़ान के महीने से जो तक़्वा प्राप्त किया संयम का जो भाग पाया है अब पूरे साल उस से लाभ उठाओ अर्थात हर काम के वक़्त अल्लाह को ध्यान में रखो और याद रखो अगर वह काम करोगे जो अल्लाह को अप्रिय है तो जहन्नम का दण्ड पाओगे और अगर वह काम करोगे जो अल्लाह को प्रिय हैं तो जन्नत का पुरस्कार पाओगे। अल्लाह तआ़ला हमको भले काम ही करने का सामर्थ दे।

आमीन

◆◇◆

–पिछले अंक से आगे

इस्लाम के तीन बुन्यादी अक़ायद

–हज़रत मौलाना अबुल हसन अली नदवी (रह0) – अनुवादकः मुहम्मद हसन अंसारी

नबूवत (दूतकर्म)का असल कारनामा

कुर्आन में आख़िरत का बयान और उसके तर्क :–

इसका एक बड़ा लक्षण और इसका एक गवाह खुद इन्सान की पैदाइश और उसका जीवन है। उसने न होने से होने तक, फिर होने के बाद अस्तित्व की परिपूर्णता तक कितने सोपान तय किये हैं। उसने वीर्य से नुत्फे, नुत्फे से जमे हुए ख़ून की या जोंक का रूप धारण किया फिर एक गोश्त का टुकड़ा बना, फिर हड्डियों का ढाँचा बना, फिर उस पर मास चढ़ाया गया, फिर वह एक दूसरी सृष्टि बन कर प्रकट हुआ। फिर उसे पेट की अन्धेरी कोठरी से निकालने के बाद वह कुछ समय तक शैश्वावस्था में रहा, फिर जवान हुआ फिर या तो उसका दूसरा क़दम मौत की चौखट पर पड़ा या उसको इतनी मुहलत मिली कि जीवन की इस बहार को देख कर उसने बुढ़ापे का पतझड़ भी देखा और जीवन का उल्टा सफर शुरु हुआ अर्थात जवानी के बाद बुढ़ापे में फिर उससे बचपने की बातें होने लगीं, उसकी शक्तियों ने एक–एक कर के जवाब दिया, स्मरण शक्ति ने साथ छोड़ा, वह बच्चों की तरह बेबस, दूसरों के सहारे का मुहताज हुआ, उस पर खुद फरामोशी तारी रहने लगी। उसके लिए हर जानी पहचानी चीज़ अंजानी हो गयी।

इस मंजिल पर सफर का एक हिस्सा ख़त्म हो गया, लेकिन उसका सफर ख़त्म नहीं हुआ, सफर की सिर्फ एक बीच की मंज़िल पेश आई जिसका नाम मौत और आलमे बरज़ख है:–

मौत एक मान्दगी का वक़्फ़ा है
यानी आगे चलेंगे दम ले कर।

अतः जिस इन्सान की असल व हक़ीक़त (मिट्टी और पानी) और फिर उसकी शुरुआत और उसकी उत्पत्ति मालूम है, उसके नज़दीक मर कर ज़िन्दा होने में कौन सी बौद्धिक शंका है और जिसने इन्सान में इतने इन्क़लाब देखे उसके लिए एक आख़िरी इन्क़लाब को मुमकिन मानने में क्या कठिनाई है। ज़िन्दगी बाद मौत का दूसरा खुला हुआ नमूना ज़मीन की दोबारा जिन्दगी के दृश्य हैं जो बार–बार आँखों के सामने आते रहते हैं, यह ज़मीन जिसके सीने में हजारों पैदा होने वाले इन्सान और ज़िन्दा होने वाले हैवानों की ज़िन्दगी की अमानतें और खज़ाने हैं, वह खुद मुर्दा पड़ी होती है, उसके होंटों पर सूख कर पपड़ियाँ जम जाती हैं, वह मिट्टी का एक बेहिस व बेजान लाश होता है जिसमें न खुद ज़िन्दगी होती है और न किसी और चीज़ के लिए सामान, लेकिन जब उसके होटों पर पानी

की बूँदें गिरती हैं और उसके गले से हो कर सीने तक पहुंच जाती हैं, तो वही ज़मीन मौत की नींद से अचानक जाग जाती है, उसमें जीवन की लहर दौड़ जाती है, वह झूम उठती है, उसका मुँह दौलत हरियाली और ज़िन्दगी का खज़ाना उगल देता है। लहलहाती खेती, भूतल पर रेंगने वाले कीड़े, साँप, नेवले आदि पृथ्वी के अन्दर जीवन और जीवनदायी का पता देते हैं। बरसात और बहार के मौसम में ज़मीन की इस ज़िन्दगी का दृश्य किसने अपनी आँखों से नहीं देखा?

ज़िन्दगी के बाद मौत के गवाह वह दृश्य हर जगह देखे जा सकते हैं और हर एक उसको देख सकता है। अलबत्ता एनाटामिस्ट, ज्योलाजिस्ट और जिसने जीवन विज्ञान तथा वनस्पति के उदय व विकास का अध्ययन किया है उसके लिए इसकी पुष्टि व मरणोपरान्त जीवन के अनुमान का अधिक अवसर है, इस कारण पवित्र कुर्आन में अल्लाह तआला ने विभिन्न स्थानों पर इन दोनों वास्तविकताओं को मरणोपरान्त जीवन के प्रमाण के लिए प्रस्तुत किया है और इनकी ओर ध्यान आकर्षित कराया है। एक स्थान पर कहता है।

अनुवाद– *''ऐ लोगो! यदि तुम को मरने के बाद ज़िन्दा होने पर संदेह है तो विचार कर लेना कि हमने तुम को मिट्टी से बनाया है, फिर नुत्फा (टपकती बूँद) फिर खून का लोथड़ा बना दिया फिर गोश्त की बोटी बना दी कभी सूरत का नक्शा बना दिया, कभी अधूरी छोड़ दी अपनी कुदरत जाहिर करने के लिए यह साफ़–साफ़ बयान जारीकर रहे हैं, एक निर्धारित अवधि तक मातृ गर्भ में जिस नुत्फा (बूँद) को चाहें ठहरा देते हैं, फिर बच्चा बना कर निकालते हैं, तुमको, ताकि भरपूर जवानी को तुम पहुंचो, कुछ लोग तुम में से वे लोग होते हैं जो जवानी ही में उठा लिये जाते हैं, कुछ वे लोग होते हैं जो बुढ़ापे वाली निकम्मी आयु तक पहुंचा दिये जाते हैं। परिणाम स्वरूप ज्ञान व बुद्धि की प्राप्ति के बाद वह सठिया कर अज्ञान हो कर रह जाता है, दूसरा प्रमाण यह है कि तुम धरती को सूखा देखते हो फिर जब हम उस पर बारिश करते हैं। तो वह ताज़ा हो जाती है तथा फूलती है भाँति–भाँति के आकर्षक हरियाली उगाती है, यह सब इसलिए है कि अल्लाह की हस्ती ही सत्य है और वह मुर्दों को जीवित करेगा तथा वह हर चीज़ पर सक्षम है तथा निःसंदेह क़यामत (महा प्रलय) आने वाली है, इसमें कोई संदेह नहीं और अल्लाह तआला क़ब्र वालों को ज़रूर उठाएंगे।*

(सूरः हज 5–7)

अनुवाद– *और हम ने इन्सान को मिट्टी के निचोड़ (जौहर) से बनाया, फिर टपकती बूँद बना कर एक सुरक्षित स्थान (अर्थात गर्भाशय) में रखा, फिर हमने उस बूँद को जमा हुआ खून बना दिया फिर उस जमे हुए खून को गोश्त का टुकड़ा बना दिया फिर उस गोश्त के टुकड़े में हड्डियां बनाईं फिर हमने उन हड्डियों पर गोश्त चढ़ा दिया, फिर हमने (उसमें रूह डाल कर) एक नई सृष्टि (मखलूक़) बना दिया, बस बड़ी शान वाला है अल्लाह जो सबसे बेहतर बनाने वाला है, फिर इसके बाद ज़रूर मरोगे और फिर निःसंदेह क़यामत (महा*

प्रलय) के दिन ज़िन्दा कर के उठाए जाओगे।

(सूरः अल–मुअ्मिनून 12–16)

धरती के जीवन तथा पानी के एहसान की हालत को कुर्आन ने अपने चमत्कारी शब्दों में विभिन्न स्थानों पर व्याख्यान किया है।

अनुवाद– *अल्लाह ही हवाओं को भेजता है, फिर वह बादलों को उठाती है, फिर वह जैसा चाहता है बादलों को आकाश में फैला देता है और उसको टुकड़े–टुकड़े कर देता है। फिर तुम उसके बीच से बारिश को निकलते हुए देखते हो, तो जब वह अपने जिन बन्दों को चाहता है बारिश पहुंचा देता है तो प्रसन्न हो उठते हैं, जबकि इस वर्षा से पहले वे निराश होते हैं। अल्लाह की रहमत की निशानियों को तो देखो कि धरती की मौत के बाद वह कैसे उसे जीवित कर देता है? इस हकीकत में तनिक भी संदेह नहीं कि अल्लाह ही मुर्दों को जिलाने वाला है और वह हर चीज़ पर कुदरत रखता है।*

(सूरः रूम 48–50)

अनुवाद– *अल्लाह ही है जिसने हवाएं भेजीं, तो वे बादल को उठाती है, फिर हम उसे किसी बेजान (सूखे) शहर की ओर हांक देते हैं। फिर हम उसके ज़रिये उस धरती को मौत (सूखने) के बाद जीवित कर देते हैं (सुन लो) इसी तरह दोबारा उठाया जाएगा।*

(सूरः फातिर 9)

अनुवाद– *उसकी खुली निशानियों में से यह है कि तुम धरती को बेजान सूखा जीवन के लक्षणों से खाली देखते हो, फिर जब हम उस पर पानी बरसा देते हैं तो वह तरो ताज़ा हो जाती है और फूलती है अवश्य वही अल्लाह है जिसने मुर्दा धरती को जीवन प्रदान किया वही मुर्दों को दुबारा जीवित करेगा, वह हर काम करने में सक्षम है।*

(सूरः हा–मीम सजदा 39)

अनुवाद– *वह अल्लाह है, जिसने आसमान से पानी बरसाया एक विशेष मात्रा में, फिर उसके द्वारा जीवन प्रदान किया किसी मुर्दा क्षेत्र को, बस ऐसे ही तुम उठाए जाओगे।*

(सूरः जुखरूफ़–11)

इन दो निशानियों तथा खुले हुए दोनों नमूनों के अतिरिक्त भी ब्रह्माण्ड का यह विशाल व महान कार्य क्षेत्र मरणोपरान्त जीवन के नमूने बन कर बिगड़ती है और टूट–फूट कर बनती रहती है, एक बेजान व संवेदनहीन चीज़ से अच्छी खासी जीती जागती, जीवन धारक हस्ती तथा एक अच्छी खासी जानदार हस्ती से बिल्कुल बेजान और मुर्दा हस्ती निकलती है। बहुत सी वस्तुओं से ऐसे विलोम लक्षण व परिणाम सामने आते हैं, बहुत सी सृष्टियाँ दुबारा पैदा की जाती हैं, जिसने सृजनहार की इस असीम क्षमता, सृष्टियों की प्रारम्भिक पैदाइश तथा बनाने व पैदा करने की विशाल प्रक्रिया का कुछ भी अध्ययन किया है उसको एक क्षण के लिए भी मरणोपरान्त जीवन में संदेह नहीं हो सकता और उसके लिए इसमें कोई बौद्धिक संदेह नहीं है।

अनुवाद– *क्या उन लोगों ने नहीं देखा कि अल्लाह किस तरह सृष्टि को पहली बार पैदा करता है, फिर वह उनको दोबारा पैदा करेगा, यह काम अल्लाह के लिए बहुत सरल है। आप उनसे कहिए कि धरती पर चल फिर कर देखो कि अल्लाह*

शेष पृष्ठ .....28....पर

ख़िलाफ़ते राशिदा

—मौलाना गुलाम रसूल मेहर —प्रस्तुतिः मु0 गुफ़रान नदवी

अमीरुलमोमिनीन हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु

जंग क़ादसियाः–

ईरान की ओर इस्लामी फ़ौजों का ज़ोर कम हो गया तो सासानियों ने फ़ौज तैयार करके सख़्त हमला किया, जिसमें मुसलमानों को बहुत नुक़सान पहुँचा, हज़रत उमर रज़ि0 ने उधर भी ध्यान दिया और हज़रत सअ़द बिन अबी वक़्क़ास रज़ि0 को सेना पति बना कर ईरान के मोरचे पर भेज दिया, इस तरह छोटी छोटी लड़ाइयाँ कई हुईं, बड़े मअरके सिर्फ़ दो पेश आये, उनमें से पहला मअ़रका क़ादसिया का था जो मई 637 ई0 में पेश आया, ईरानी फ़ौज बहुत बड़ी थी, रुस्तम उसका सेना पति था, जो बहादुरी में यकता माना जाता था, तीन दिन लड़ाई जारी रही, ईरानी फ़ौज के हाथियों ने शुरु–शुरु में मुसलमानों के लिए पेरशानी पैदा की, लेकिन बहादुरों ने हिम्मत कर के हाथियों की सूण्डें काट दीं और वह पीछे की ओर भागे, उस लड़ाई में 20 हज़ार ईरानी मारे गये, उनमें रुस्तम भी था, उस एक लड़ाई ने पूरे इराक़ अरब को ईरानियों से ख़ाली कर दिया और हज़रत सअ़द बिन अबी वक़्क़ास रज़ि0 मदाएन पहुंच गये, जो ईरानियों का पायातख़्त (राजधानी) था, और जहाँ सैकड़ों साल से उनकी दौलत जमा हो रही थी।

जंग नहाविन्दः–

फिर ईरानी सिपह सालार सेनापति मरजान शाह ने भारी फौज तैयार की। उस फ़ौज के साथ ईराक़ अजम मे नहाविन्द के मुक़ाम पर फ़ैसलाकुन (निर्णायक) जंग हुई, 641 ई0 में यानी क़ादसिया से तक़रीबन चार वर्ष बाद, ईरानी फ़ौज 1.5 लाख थी, उस जंग में घातक ज़ख़्म लगे लेकिन आस पास के लोगों ने कह दिया कि लड़ाई के फ़ैसले तक किसी को कानों कान ख़बर न हो, मरजान शाह पराजय हुआ, तीस हज़ार ईरानी मारे गये बाक़ी भाग निकले, मुसलमानों ने हमदान तक पीछा किया नोमान रज़ि0 उस वक़्त तक ज़िन्दा थे, कामयाबी की ख़ुश ख़बरी सुनी तो फ़रमाया अलहम्दु–लिल्लाह! उसके साथ जान दे दी, उनकी शहादत की ख़बर सुन कर हज़रत उमर रज़ि0 बे इख़्तियार रो पड़े।

ईरान की फ़तह (विजय):–

इसके बाद ईरान पर लशकर कशी शुरु हो गई, उसके तमाम सूबे एक के बाद एक फ़तह हो गये, आख़िरी सासानी बादशाह यज़्द गर्द भागता हुआ "भरो" (तुरकिस्तान) पहुँचा, वहां अपने किसी दरबारी के हाथ मारा गया और पूरब में इस्लामी हुकूमत की सरहद सिन्ध पर पहुंच गयी एक अमरीकन इतिहास कार ने लिखा है:–

सातवीं सदी मसीही की पहली तिहाई में अगर कोई शख़्स यह पेशीनगोई करने की जुरअत करता कि अरब की असभ्य और अपरिचित सरज़मीन से अचानक एक अनदेखी ताक़त प्रकट होगी जो उस ज़माने की दो विश्वव्यापी ताक़तों से टकरा जायेगी, और एक ओर सासानी ताक़त की पूरी मीरास संभाल लेगी और दूसरी ओर रूमी ताक़त के हरे भरे उपजाऊ सूबे छीन लेगी तो उसे पागल या दीवाना क़रार दिया जाता, लेकिन यही पेश आया, सामने आया। मालूम होता है कि रसूले खुदा की वफ़ात के बाद अरब की बंज़र सरज़मीन जादू के ज़रिये से उन बहादुरों की परवरिशगाह (पालन पोषण की जगह) बन गई जिन की नज़ीर (उपमा) क्वालिटी और क्वांटिटी के एतिबार से किसी दूसरी जगह नहीं मिलती। इराक़ ईरान, शाम (सीरिया) और मिस्र में हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि0 और हज़रत अम्र बिन आस रज़ि0 की फ़ौजी मुहिम (सैन्य अभियान) एतिहासिक कारनामों की उन मुहिमों में शामिल हैं जिन को कुशलता पूर्वक अन्तिम चरण तक पहुंचाया गया और निपोलियन, हेनी बाल या अस्कन्दरिया के जंगी कारनामों से हर हालत में बढ़ी हुई हैं।

हज़रत उमर रज़ि0 की शहादतः-

ज़िलहिज्जह की सन् 63 हिजरी की आख़िरी तारीखों में फ़ीरोज़ नाम का एक पारसी गुलाम ने हज़रत उमर रज़ि0 पर अचानक ख़ंज़र से वार किया, जब आप सुब्ह की नमाज़ पढ़ रहे थे और पैदरपे छः ज़ख़्म लगाये उन्हीं ज़ख़्मों की वजहों से पहली मुहर्रम सन 24 हिजरी को वफ़ात पाई। लोगों के इसरार (आग्रह) से 6 लोगों को नामज़द (नामांकित) किया कि उनमें से किसी एक को ख़लीफ़ा बना लिया जाये, फिर हज़रत आइशा रज़ि0 से रसूल पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पहलू में दफ़न होने की इजाज़त मिली।

आख़िर में फ़रमाया कि मैंने ख़िलाफ़त के ज़माने में जितना वज़ीफ़ह लिया उस का हिसाब किया जाये और यह रक़म मेरे मतरूका माल (छोड़े हुऐ माल) से अदा की जाये, वह माल काफ़ी न हो तो मेरे ख़ानदान वालों से मदद ली जाये, यह पूरी रक़म हज़रत अमीर मआविया रज़ि0 ने अदा की और उसके बदले में हज़रत उमर रज़ि0 का मकान लेकर वक़्फ़ कर दिया।

निज़ामे ख़िलाफ़त (हज़रत उमर रज़ि0 की शासन व्यवस्थाः-

हज़रत अबू बकर रज़ि0 के ज़माने में जो जमहूरी निज़ाम (लोकतांत्रिक व्यवस्था) शुरु हुई थी, हज़रत उमर रज़ि0 ने उसकी बुन्यादें खूब मज़बूत कर दीं, उनका अपना इरशाद (उपदेश) है कि ख़लीफा का हक़ बैतुल माल (राज कोष) में उतना ही है जितना कि एक यतीम अनाथ के मुरब्बी अभिभावक का यतीम के माल में, उससे ज़ियादा नहीं, अगर मैं दौलतमंद हूँगा तो कुछ न

लूंगा, हाजतमंद हूँगा तो सिर्फ़ इतना लूंगा, जिससे मामूली खाना पीना चल सके, यह भी फ़रमाया करते थे कि मेरे ऊपर अवाम (जनता) के कई हक़ हैं मसलन कि मुझ से पूछें मैंने ख़िराज (राजस्व कर) और माले ग़नीमत बेजा तौर पर तो जमा नहीं किया और मेरे हाथ से जो कुछ खर्च हुआ, बेजा तो ख़र्च नहीं हुआ, एक हक़ यह है कि मैं लोगों की आय बढ़ाऊँ, देश की सीमाओं को मज़बूत बनाऊँ और अवाम के लिए कोई ख़तरा न पैदा होने दूँ।

आज लोकतांत्रिक हुकूमतों में देश की आमद व ख़र्च (आय–व्यय) पर नुकता चीनी (आलोचना) के जो अधिकार देश के प्रतिनिधियों को प्राप्त हैं उनमें से कौन सा अधिकार है जो हज़रत उमर रज़ि0 के बयान फ़रमाये हुए अधिकारों के बराबर पहुंचता है?

दियानतदारी (सत्यनिष्ठा) का यह हाल था कि एक बार बीमार पड़े, हकीम ने शहद का प्रयोग बताया, बैतुलमाल से शहद उस समय तक न लिया जब तक ज़रूरत बता कर मुसलमानों से इजाज़त न मंगवाई।

हुकूमत के उहदेदारान :–

हज़रत उमर रज़ि0 के ज़माने में सलतनत की सीमाएं बहुत फैल गई थीं, नये राज्य भी बहुत बन गये थे, आपने हर सूबे में जो बड़े बड़े उहदेदार नियुक्त किये उनकी तफ़सील यह है:–

1. सूबेदार (गवर्नर)
2. कातिब (चीफ़ सिक्रेट्री)
3. कातिबे दीवान यानी फ़ौज का सिक्रेट्री
4. साहिबुल ख़िराज यानी कलक्टर
5. अफ़सर पुलिस
6. अफ़सर ख़ज़ाना
7. क़ाज़ी यानी जज

अफ़सर को मुकर्रर करते वक़्त उनसे अहद (प्रतिज्ञा) लेते थे कि तुर्की घोड़े पर सवार न होंगे, बारीक़ कपड़ा न पहनेंगे, छना हुआ आटा न खायेंगे, दरवाज़े पर दरबान न रखेंगे, फिर आमिल (अधिकारी) की माली हालत और कारोबार की कड़ी निगरानी करते थे।

विभिन्न विभागः–

हज़रत उमर रज़ि0 ने ज़मीन की पैमाइश कराके उश्र (ज़मीनी पैदावार की ज़कात) और ख़िराज (राजस्व कर) के क़ानून बनाये, मरदुम शुमारी (जनगणना) कराई, जेल ख़ाने, सड़के, पुल मस्जिदें, छावनियाँ और मेहमान ख़ाने बनवाये, मक्का मुअज्जमा और मदीना मुनव्वरा के बीच हर मन्ज़िल पर चौकियाँ और सराएं बनवाईं, हर मुक़ाम पर पानी का इन्तिज़ाम किया। खेती बाड़ी की तरक़्क़ी के लिए नहरें खुदवाईं, उचित स्थानों पर नये शहरों की बुन्याद रखी, मसलन कूफ़ा, बसरा इराक़ में, फ़स्तात मिस्र में, तनख़्वाह के अलावा खाना और कपड़ा सरकारी मिलता था रिसाले के घोड़े के लिए चरागाहें बनवाईं, ग़रज की उनके ज़माने में हुकूमत के तमाम विभाग ख़ूब संगठित हो गये।

शेष पृष्ठ .....18...पर

रमज़ानुल मुबारक

—डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी

अल्लाह तआला ने इन्सानों को इतनी नेअ़मतें दी हैं कि वह अगर उनको गिनना चाहे तो गिन नहीं सकता उन्हीं नेअ़मतों में एक बड़ी अहम नेअ़मत रमज़ान का महीना और उसके रोज़े हैं अल्लाह तआ़ला ने आ़किल, बालिग़ मुसलमानों पर रमज़ान के रोज़े फर्ज़ किये हैं रोज़े अगली उम्मतों पर भी फर्ज़ थे और इस उम्मत पर भी फर्ज़ हुए इस फर्ज़ की अदाएगी में कोताही बड़ी बदनसीबी है। अल्लाह तआ़ला ने खुद इसको आसान कर दिया है यानी अगर कोई मरीज़ है, बीमार है, रमज़ान में रोज़े नहीं रख सकता तो वह रमज़ान के बाद जितने रोज़े छूटे हों उनको पूरे कर ले। इसी तरह जो शख्स सफर में हो और रोज़ा रखने में उसके लिए कठिनाई हो तो वह भी सफर के दौरान रोज़ा न रखे मगर बाद में उनको पूरा कर ले।

इस बयान को कुरआन मजीद में इस तरह बयान किया गया है।

अनुवादः *"ऐ ईमान वालो तुम पर रमज़ान के रोज़े फ़र्ज़ किये गये जैसे तुम से पहले की उम्मतों पर फ़र्ज़ किये गये थे ताकि तुम मुत्तक़ी (संयमी) बन जाओ वह भी गिने दिन यानी 29 या 30"।*

(अल बक़रहः 183,184)

फिर आगे बताया *"रमज़ान वह महीना है जिसमें कुरआन नाज़िल किया गया है कुरआन का वस्फ़ ये है कि वह लोगों के लिए रहनुमा है और हिदायत के साफ व वाज़ेह और हक़ से बातिल को जुदा करने वाले दलाइल का मजमूआ़ है सो जो शख्स तुम में से इस महीने को पाये तो उसको चाहिए कि इस माह के रोज़े रखे और जो शख़्स बीमार हो या सफर में हो तो उसके ज़िम्मे और दूसरे दिनों से गिनती का पूरा करना है अल्लाह तआ़ला को तुम्हारे लिए आसानी मंजूर है और उसको तुम्हारे लिए दुशवारी मंजूर नहीं।*

ये रिआयत के एहकाम इसलिए दिये गये ताकि तुम गिनती को पूरा कर लिया करो और ताकि तुम इस एहसान पर कि ख़ुदा ने तुम को सही तरीक़ा बता दिया उसकी बुज़ुर्गी बयान किया करो ताकि तुम शुक्र बजा लाओ"। (अल बक़रहः 185)

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हदीसों से मालूम हुआ कि अल्लाह के करम से रमज़ान में हर इबादत का सवाब 70 गुना बढ़ा कर दिया जाता है, और ये भी मालूम हुआ कि रमज़ान का पहला अशरा (प्रथम 10 दिन) रहमत का होता है और दूसरा मग़फिरत (क्षमा) तीसरा अशरा जहन्नम से छुटकारे का होता है। वास्तव में रमज़ान का हर लम्हा (पल)

रहमत भी है और मग़फिरत भी और जहन्नम से छुटकारे का भी लेकिन अल्लाह की मसलिहत उसको तीन अशरों में बांट दिया इसको हम इस तरह समझते हैं कि पहले अशरे में रोज़ेदार जो भला काम करेगा जो ख़ैर का काम करेगा उसके साथ अल्लाह की रहमत होगी उस पर अल्लाह की रहमत उतरेगी। वह ख़ैर का काम उसके लिए आसान और सरल हो जाएगा उसको महसूस होगा कि उसके साथ अल्लाह की रहमत काम कर रही है उसको एक तरह का सुकून मिलेगा एक तरह का सुरूर (आनन्द) मिलेगा। दूसरे अ़शरे में जब रोज़ेदार अल्लाह तआ़ला से मग़फिरत (क्षमा) मांगेगा तो उसके सारे गुनाह छोटे बड़े सब मुआ़फ़ हो जाएंगे चाहे वह समन्दर की झाग के बराबर हों लेकिन याद रहे हक़्कुल्इबाद का गुनाह न माफ होगा सिवाए इसके कि वह जिसका हक़ मारा है उसको लौटा दे जिसको सताया है उस से क्षमा चाह ले जिसको दुख दिया हो उस से माफी मांग ले जिसको मारा है उससे कहे तुम भी हम को मार लो या क्षमा कर दो।

तीसरे अ़शरे में जहन्नम से छुटकारे का मतलब ये है कि पहले अ़शरे की रहमत का लाभ उठाया दूसरे अ़शरे में गुनाहों से अपने को पाक कराया तो जहन्नम से छुटकारे का परवाना मिल जाएगा लेकिन याद रहे कि इस परवाने का लाभ जब ही मिलेगा जब इस परवाने के विरुद्ध काम न किया जाए।

रमज़ान ऐसा महीना है जिसमें अल्लाह की आख़िरी किताब पवित्र कुर्आन को उतारा गया जिसमें लोगों के लिए हिदायत है और हिदायत की साफ साफ दलीलें और हक़ व बातिल (सत्य असत्य) के बीच फ़र्क़ करने के नियम हैं।

रमज़ान का महीना वह महीना है जिसकी एक रात हज़ार महीनों से बेहतर है उसको लैलतुल क़द्र कहते हैं, यानी अगर इन्सान लैलतुल क़द्र को छोड़ कर हज़ार महीने इबादत करे तो भी लैलतुल क़द्र के बराबर न हो सकेगा लैलतुलक़द्र ही में कुरआन को लौहे महफ़ूज़ से आसमाने दुन्या पर उतारा गया फिर वहां से ज़रूरत के मुताबिक़ थोड़ा थोड़ा उतारा जाता रहा और 23 वर्षों में पूरा कुरआन उतरा, लैलतुल क़द्र रमज़ान के आखिरी अशरे (अंतिम दशक) की किसी ताक़ रात में आती है लैलतुल क़द्र रमज़ान के आखिरी अशरे में तलाश करने और उसमें जाग कर इबादत करने का निर्देश है। रमज़ान के आखिरी अ़शरे में एअ़तिकाफ़ सुन्नत है यानी आदमी अपने घर बार और कारोबार छोड़ कर आख़िरी अ़शरा मस्जिद में गुज़ारे।

मगर यह ऐसी सुन्नत है कि बस्ती का कोई भी एअ़तिकाफ़ कर ले तो सब की तरफ़ से ये सुन्नत अदा हो जाएगी। एअ़तिकाफ़ का सबसे बड़ा फायदा लैलतुल–क़द्र से फायदा उठाना होता है। हम को चाहिए कि हम रमज़ान के रोज़े एहतिमाम से रखें और नेकियां करने का एहतिमाम करें। अजीब बात है सेहरी खाएं खाना पेट में जाए और सवाब भी मिले, इफ़्तार करें भूख प्यास मिटाएं और सवाब भी पायें, कितना करम है अल्लाह तअ़ाला का अल्लाह तअ़ाला हम सब को रमज़ान के महीने से पूरा फायदा उठाने की तौफीक़ दे और अच्छे अच्छे काम करने की तौफ़ीक़ दे। मोहताज़ों ग़रीबों, बे सहारा, बेवाओं यतीमों की मदद करने की तौफ़ीक़ दे। (आमीन)

❖❖❖

खिलाफते राशिदा.....

शख़सियत (व्यक्तित्व):–

हज़रत उमर रज़ि0 के अख़लाक़ आदात और फ़जीलतों के बयान करने के लिए एक दफ़्तर चाहिए, इतनी बड़ी सल्तनत के मालिक होने के बाद भी उनकी सादगी में फ़र्क न आया, पेवन्द लगे हुए कपड़े पहनते और मोटे आटे की रोटी खाते, अगरचि उनके हाथ से हज़ारों रूपये लोगों में तक़सीम होते थे।

रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ात अक़दस के साथ उनकी महब्बत दरजे कमाल पर पहुंची हुई थी इत्तिबाए सुन्नत का इश्क़ था, जहां तक होता खुद वक़्त बे वक़्त फिर फिर कर लोगों के हालात देखते। किसी को ज़रा सी तकलीफ़ होती तो फ़ौरन दूर करते, उम्मत की ख़िदमत के किसी भी काम में तअम्मुल (संकोच) न था ज़ुहद व क़नाअत (संयम व सन्तोष) का अन्दाज़ा सिर्फ हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु अन्हु के इस इरशाद से करो, फरमाते हैं:–

''हज़रत उमर रज़ि0 जुमे के दिन खुतबा दे रहे थे मैंने उनके तहबन्द के पेवन्द गिने तो बारह निकले'' ग़रज़ वह एक ख़ास नमूना कायम कर देना चाहते थे। उनके नज़दीक ख़लीफ़ा के लिए ज़रूरी था कि उसके मुतअल्लिक़ ज़ाती नफ़ा जूई (व्यक्तिगत फ़ाइदा चाहना) और जानिबदारी पक्षपात का तनिक शुबहा भी किसी के दिल में पैदा न हो सके।

अपने क़बीले के लोगों को कभी पद न दिया, ख़िलाफ़त के लिए लोगों को नामज़द (नामांकित) किया तो अपने बेटे हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि0 तक को छोड़ दिया, हालांकि इल्म व फ़ज़्ल और तक़वा में वह बलन्द पाया था।

❖❖❖

तालीम ही तरक़्क़ी की शाह कलीद

—मौलाना सय्यिद मुहम्मद हम्ज़ा नदवी

मुसलमानों में तालीम से दिलचस्पी कम होने की वजह से ज़िन्दगी के हर मैदान में हम बहैसियत कौम ज़वाल का शिकार हो रहे हैं, इंफ़िरादी तौर पर मुतअ़द्दिद अफ़राद ऐसे मिलेंगे कि वह अपनी ज़ाती कोशिशों से तरक़्क़ी कर रहे हैं, लेकिन ऐसी मिसालें उंगलियों पर गिनी जा सकती हैं, बड़े शहर हों या छोटे शहर, क़स्बे हों या देहात अगर जाइज़ा लिया जाए, तो दस से पन्द्रह फीसद तक मुसलमान तालीम याफ़्ता मिलेंगे, क़स्बों और देहातों का और बुरा हाल है अगर वहां मदरसे न हों तो और बुरा हाल हो, इसके मुक़ाबले में बिरादराने वतन में तालीम हासिल करने का रवाज़ बहुत ज़ियादा है, यहां तक कि अगर सुब्ह के वक़्त देहातों के क़रीब से गुज़रें तो स्कूल जाने वाले बच्चों और बच्चियों को क़तार दर क़तार स्कूल जाते देखा जा सकता है जिन में मुसलमान बच्चे और बच्चियाँ न होने के बराबर होती हैं, खेतों और बागात में जानवर चराते आप उनको देख सकते हैं और खून के आँसू रो सकते हैं, इस सूरते हाल में यह उम्मीद करना कि हमारी क़ौम तरक़्क़ी करेगी, बिल्कुल अपने को धोका देने के मुतरादिफ़ है।

हमारे क़ाइद चाहे दीनी हों या दुन्यावी, वह इस सिलसिले में कोई ज़ियादा ज़िम्मेदारी नहीं समझते, इब्तिदाई तालीम का इन्तिज़ाम करना, वह शायद ज़रूरी नहीं समझते, जब बच्चा प्राइमरी की तालीम नहीं हासिल करेगा, तो आगे की तालीम कैसे हासिल करेगा, हमारे जो अफ़राद तालीम की तरफ़ मुतवज्जेह भी हैं तो सिर्फ मेडिकल कालेज, इंजीनियरिंग कालेज जैसे आला तालीम के इदारे ही क़ाइम करने की तरफ़ मुतवज्जेह है।

इस पर गौर करने की ज़रूरत है कि मेडिकल कालेज और इंजीनियरिंग कालेज जैसे इदारे क़ाइम करने में मुसलमानों का क्या फ़ायदा है और उन में कितने बच्चे पढ़ सकते हैं? लाखों रूपये डोनेशन देने के बाद दाख़िला मिलता है, इस सिलसिले में कोई रिआ़यत मुसलमानों के साथ नहीं होती, इस सूरत में आप के क़ाइम करदा इन इदारों का मुसलमानों का कोई फाइदा नहीं मिलता है, अगर लोखों रूपये डोनेशन देने के बाद दाखिला लेना है तो किसी भी इदारे में चाहे गैर मुस्लिमों का ही इदारा हो, आसानी से दाख़िला मिल सकता है।

दूसरे यह कि अगर प्राइमरी और जूनियर व हाई स्कूल वगैरह की तालीम के इदारे नहीं होंगे तो उन आला तालीमी इदारों की सतह तक मुसलमान बच्चे पहुँचेगे कैसे?

काश उन आला तालीमी इदारों के ज़िम्मेदार ह़ज़रात अपनी सतह से कुछ नीचे उतर कर ग़रीब मुसलमानों के लिए ऐसे इदारे भी काइम करें जहाँ इब्तिदाई तालीम का इंतिज़ाम हो और मुफ़्त हो।

❖❖❖

रमज़ानुल मुबारक के फ़ज़ाइल

—हज़रत मौ0 मु0 अब्दुश्शकूर फ़ारूक़ी रह0 —हिन्दी लिपिः फौज़िया सिद्दीक़ा

रोज़ा इस्लाम का तीसरा रुक्न है इसकी शरीअत में जो ताकीद आई है उससे माहिरीने शरीअ़त ख़ूब वाक़िफ़ हैं मुन्किर इसका काफ़िर, तारिक इस का फासिक़ है, इसकी फ़जीलत के लिए सिर्फ़ इसी क़द्र काफ़ी है कि बाज़ उलमा ने इसके बेइन्तिहा फ़ज़ाइल को देख कर उसको नमाज़ जैसी अज़ीमुश्शान इबादत पर तरजीह व तफ़्ज़ील दी और अपने क़ौल की ताईद में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वह हदीस पेश की है जिसको इमाम नसई रह0 ने अबू उमामा से रिवायत की है वह कहते हैं कि मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में अर्ज़ किया कि मुझ को कोई ऐसी चीज़ बतलाइये जिसको मैं आप से याद रखूं आपने फरमाया कि रोज़े को अपने ऊपर लाज़िम कर लो इसलिए कि कोई अमल इसके मिस्ल नहीं, अगरचि अक्सर उलमा का मज़हब तफ़्ज़ीले नमाज़ है और वही हक़ है पस इसमें इख़्तिलाफ़ हो रहा है कि नमाज़ अफ़्ज़ल है या रोज़ा तो अब किसी दूसरी इबादत का क्या रुत्बा है जो उसकी हमसरी कर सके ज़कात हो या हज वल्लाहु तआ़ला आलम।

कुर्आन मजीद को अगर देखिए तो कहीं रोज़े की फरज़ीयत बयान हो रही है कि ''ऐ ईमान वालो फ़र्ज़ किया गया तुम पर रोज़ा चंद दिनों जैसे फ़र्ज़ किया गया तुम से अगलों पर ताकि तुम परहेज़गार हो जाओ'' और कहीं रोज़े की फ़ज़ीलत बयान हो रही है कि रोज़ा रखना तुम्हारे लिए बेहतर और मुफ़ीद है, कहीं माहे सियाम की बुज़ुर्गी ज़ाहिर फ़रमाई जाती है रमज़ान का महीना जिस में कुर्आन उतारा गया जो लोगों को हिदायत करता है और निशानियां हैं हिदायत की और हक़ को बातिल से जुदा करने की हत्ता कि एक पूरी सूरत उस की एक रात की फ़ज़ीलत में नाज़िल हुई बेशक हम ने उतारा है उस कुर्आन को लैलतुल क़द्र में और तुम जानते हो कि क्या मर्तबा है लैलतुल क़द्र का लैलतुल क़द्र बेहतर है हज़ार महीनों से नमाज़ जो बिलइत्तिफ़ाक़ तमाम इबादात में आला और आज़म है इसके मसाइल भी किताबुल्लाह में इस क़द्र नहीं जितने रोज़े के मसाइल हैं कहीं रूयते हिलाल के अहकाम बयान होते हैं कि जो शख्स तुम में से इस महीने को पाये तो चाहिए कि

रोज़ा रखे उसका, कहीं रोज़े की इबतिदा इन्तिहा और इफ़तार के अहकाम इरशाद होते हैं कि फिर पूरे करो रोज़े को रात तक और कहीं सुहूर खाने की इजाज़त और उसका वक़्त बयान फरमाया जाता है कि खाओ पियो यहां तक कि ज़ाहिर हो तुम को सफ़ेद लकीर (सुब्ह सादिक़) सियाह लकीर (रात) से फ़ज्र के वक्त कहीं शब के वक़्त ज़िमाअ़ वगैरा की इजाज़त अता होती है कि जाइज़ किया गया तुम्हारे लिए रोज़े की रात में लज़्ज़त हासिल करना अपनी औरतों से वह तुम्हारी छुपाने वाली हों और तुम उन को छुपाने वाले, कहीं एतिकाफ का ज़िक्र हो रहा है कि और न मिलो (जिमाअ करो) औरतों से जिस हालत में कि तुम मोतकिफ़ हो मस्जिदों में, कहीं उस की क़ज़ा के अहकाम इरशाद होते हैं कि और जो कोई तुम में से बीमार हो या सफ़र पर हो तो उसको शुमार करना चाहिए दूसरे दिनों से, कहीं माज़ूरों के हक़ में ख़िताब होता है कि उन लोगों पर जो नहीं ताक़त रखते हैं, इस (रोज़े) की, वाजिब है सदक़ा हर रोज़े पर एक मोहताज का खाना।

ग़रज़ की इसी तरह बकसरत किताबुल्लाह में इस का ज़िक्र कहीं सराहतन कहीं इशारतन, सब्र के लफ़्ज़ से, कुर्आन मजीद में अकसर यही मुराद है, मदद चाहो सब्र और नमाज़ से, सब्र से मुराद यहां रोज़ा है।

(तफ़्सीर जलालैन)।

रमज़ान में जन्नत के दरवाज़े खुल जाते हैं और दोज़ख़ के दरवाज़े बन्द हो जाते हैंः-

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जहां रमज़ान की पहली रात हुई शयातीन और सरकश जिन जकड़ दिये जाते हैं और दोज़ख़ के दरवाज़े बन्द कर दिये जाते हैं कोई दरवाज़ा उस का ख़ुला नहीं रहता और जन्नत के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं कोई दरवाज़ा उसका बन्द नहीं रहता और एक मुनादी पुकारता है कि ऐ तालिबे ख़ैर सामने आ और ऐ तालिबे शर रुक जा और अल्लाह आज़ाद करता है लोगों को दोज़ख़ से और यह निदा और आज़ादी हर रोज़ होती है। (तिर्मिज़ी)

अगर किसी को शुब्हा हो कि जब शयातीन मुक़य्यद हो जाते हैं तो चाहिए कि कोई शख़्स इस माहे मुबारक में गुनाह और नाफ़रमानी ना करे हालांकि मुशाहिदा उस के खिलाफ़ है, जवाब इसका यह है कि गुनाहों की कमी तो ज़रूर हो जाती है, बहुत बे नमाज़ी नमाज़ पढ़ने लगते हैं रमज़ान के नमाज़ी मशहूर हैं, हां बिलकुल ना होने की वजह यह है कि नफ़्से इन्सानी जो ग्यारह महीने तक शैतान के इग़वा से उसके हम रंग हो रहा है

उसमें ख़ुद गुनाह करने की इस्तेदाद आ गई है।

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक दिन फ़रमाया कि आ गया रमज़ान का मुबारक महीना अल्लाह ने तुम पर इसके रोज़े फ़र्ज़ किये हैं इस महीने में जन्नत के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और दोज़ख़ के दरवाज़े बन्द कर दिए जाते हैं और क़ैद कर दिये जाते हैं इसमें सरकश जिन, इस में एक रात ऐसी है जो बेहतर है हज़ार महीनों से, जो कोई इस के फायदे से महरूम रहा वह बेशक बेनसीब है।

(नसई, मुसनद इमाम अहमद)

रमज़ान में इबादत का सवाबः–

हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ि0 कहते हैं कि एक दफ़ा नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने शाबान के आख़री दिन में हम लोगों से ख़िताब कर के फरमाया कि ऐ लोगों तुम पर साया फ़गन हुआ है, एक बुज़ुर्ग महीना एक मुबारक महीना ऐसा महीना है जिस में एक रात है जो बेहतर है हज़ार महीनों से, अल्लाह ने इस के रोज़े तुम पर फ़र्ज़ किये हैं और इस की रातों को इबादत करना सुन्नत क़रार दिया है। जो शख़्स इस महीने में अल्लाह का तक़र्रुब चाहे, कोई नफ़्ल इबादत करके वह मिस्ल उस शख़्स के होगा जो और दिनों में फ़र्ज़ अदा करे, जो इस महीने में एक फ़र्ज़ अदा करे वह मिस्ल उस शख़्स के होगा जो और दिनों में सत्तर फ़र्ज़ अदा करे। यह महीना है सब्र का और सब्र का बदला जन्नत है। यह महीना है यकजा हो कर इबादत करने और मिल कर खाने पीने का। यह महीना है जिस में मोमिन का रिज़्क़ बढ़ाया जाता है। जो शख़्स इस महीने में किसी रोज़े दार की रोज़ा कुशाई करे उस के सब गुनाह बख़्श दिये जाएंगे और दोज़ख़ से आज़ाद कर दिया जाऐगा और उसको इस क़द्र सवाब मिलेगा जितना इस रोज़ेदार को बे इसके कि इस रोज़ेदार के सवाब में कुछ कमी की जाए सलमान रज़ि0 कहते हैं कि हम लोगों ने अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हम में से हर शख़्स इस क़द्र नहीं पाता है कि जिस से रोज़ेदार की रोज़ा कुशाई करे। इरशाद हुआ कि अल्लाह यही सवाब उस शख़्स को भी देगा जो किसी रोज़ेदार की रोज़ा कुशाई एक घूँट पानी या एक छुहारे से कराये और जो सैर हो कर खिलाये उसको अल्लाह मेरे हौज़ से ऐसा शरबत पिलाएगा कि फिर प्यासा ना होगा। बिल आख़िर जन्नत में दाख़िल होगा। यह ऐसा महीना है जिस का शुरुअ (पहला अ़शरा) रहमत है और दरमियान मगफ़िरत है और उस का आख़िर आज़ादी है

दोज़ख़ से। जो कोई इस महीने में अपने ग़ुलाम से कम काम ले अल्लाह उस को बख़्श देगा और दोज़ख़ से आज़ाद कर देगा।

(मिशकात)

एक हदीस में आया है कि रमज़ान सब महीनों का सरदार है।

(मिरक़ातुल मफ़ातीह़)

हज़रत अनस इब्ने मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि एक दिन हम सब लोग मस्जिद में बैठे हुए थे कि इतने में एक शख़्स ऊँट पर सवार आया और मस्जिद में उस ऊँट को बिठा कर वहीं बांध दिया फिर हम लोगों से पूछा कि तुम में मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) कौन हैं, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हम लोगों के दरमियान तकिया लगाये बैठे हुए थे। हम लोगों ने कहा कि यह हैं तब उसने आप से अर्ज़ किया कि ऐ इब्ने अब्दुल मुत्तलिब, मैं आप से कुछ पूछने वाला हूँ और पूछने में सख़्ती करूँगा, आप अपने दिल में रंजीदा ना हों, आपने फरमाया कि जो कुछ तेरे दिल में आये पूछ तब उसने कहा मैं आप से पूछता हूँ आप को क़सम दे कर आप के परवरदिगार की और अगलों के परवरदिगार की कि क्या अल्लाह ने आपको तमाम लोगों की तरफ़ रसूल बना कर भेजा है आपने फरमाया, हां फिर उसने कहा मैं आपको अल्लाह की क़सम दे कर पूछता हूं कि क्या अल्लाह ने आप को हुक्म दिया है दिन रात में पाँच नमाज़ों के पढ़ने का आपने फरमाया बारे ख़ुदाया हाँ, फिर उसने कहा कि मैं आपको क़सम दे कर पूछता हूं कि क्या अल्लाह ने आप को हुक्म दिया है साल भर में एक महीने के रोज़े रखने का आपने फरमाया बारे ख़ुदाया हाँ फिर उसने कहा कि मैं आपको क़सम देता हूं कि क्या अल्लाह ने आपको हुक्म दिया कि हमारे मालदारों से सद्क़ा ले कर हमारे फ़क़ीरों को दिया जाए, आप ने फरमाया कि बारे ख़ुदाया हाँ तब उसने कहा कि मैं ने यक़ीन किया आप की बातों पर मैं क़ासिद हूं अपनी क़ौम का, मेरा नाम ज़िमाम बिन सालबा है एक रिवायत में है कि इस के बाद आप ने फरमाया कि अगर यह सच कहता है तो बेशक ज़रूर जन्नत में दाख़िल होगा।

(बुख़ारी)

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास कुछ लोग क़बीले अब्दुल क़ैस के आए और अर्ज़ किया कि हम आप के पास एक दूर जगह से आये हैं और हमारे आप के दरमियान कुफ़्फ़ार रहते हैं उनके सबब से सिवाए उन हराम महीनों के और कभी नहीं आ सकते लिहाज़ा आप हम को ऐसी बात बतला दीजिए कि हम अपने क़बीले वालों से जा कर कह दें और उसके सबब से हम सब जन्नत में दाख़िल हों, आपने उनको चार चीज़ों का हुक्म दिया और चार चीज़ों से मना किया, फिर पूछा कि जानते हो

शेष पृष्ठ .....28...पर

वालिदैन के हुक़ूक

—अब्दुल रशीद सिद्दीक़ी, रायबरेली

इस्लाम ने माँ–बाप का हक़ भी बता दिया।
जन्नत किसे मिलेगी, यह भी बता दिया।।

प्यारे नबी तो मेरे जिन्दगी के रहबर।
जायेगा कौन जन्नत, यह भी बता दिया।।

माँ की करोगे ख़िदमत, है पैर तले जन्नत।
अल्लाह के नबी ने, यह भी बता दिया।।

दरवाजा खोलो जन्नत का, बाप की खिदमत से।
देखो हदीस पाक में, यह भी बता दिया।।

कोई भी अगर देखे, वालिद को मोहब्बत से।
हज का सवाब पायेगा, यह भी बता दिया।।

माँ–बाप की बातों पर तुम उफ़ नहीं करना।
कुरआन ने सलीक़ा, हम को बता दिया।।

देखो न वालिदैन को, तिरछी निगाहों से।
इस की भी नहीं माफी, यह भी बता दिया।।

माँ–बाप को मारेगा, कोई भी अगर सुन लो।
औलाद उसे मारेगी, यह भी बता दिया।।

माँ–बाप की ख़िदमत से, दोनों जहां बनेंगे।
सिद्दीक़ी ने जो सीखा, सब कुछ बता दिया।।

आप के प्रश्नों के उत्तर

—मुफ़्ती मुहम्मद ज़फर आलम नदवी

प्रश्नः बाज़ लोग हार्डवर्किंग (सख़्त मेहनत) का उज़्र पेश करके रमज़ान के रोज़े नहीं रखते हैं उनके लिए क्या हुक्म है?

उत्तरः हर आ़क़िल बालिग़ मुसलमान पर रमज़ान के रोज़े फर्ज़ हैं चाहे वह सख़्त मेहनत का काम करता हो या हल्की मेहनत का काम हो, सख़्त मेहनत ऐसे कामों को कहते हैं जिनमें दिन में भूख लग जाती है और बार–बार पानी पीना पड़ता है जैसे ईटों को सर पर रख कर ढोना, फावड़े से खुदाई करना, कुदाल से गुड़ाई वग़ैरा ये सख़्त मेहनत वाले काम उस वक़्त उज़्र बन सकते हैं कि जब सख़्त मेहनत वाले काम किये बग़ैर खुद को और बाल बच्चों की रोज़ी रोटी न मिल सके फिर भी एक मुसलमान को चाहिए कि रमज़ान में मुमकिन हो तो सख़्त मेहनत वाले काम न करें लेकिन मजबूरन करना ही पड़े तो रोज़े रखने की हिम्मत करें फिर भी अगर रोज़े छूट जाएं तो उनकी क़ज़ा करे सख़्त मेहनत वाले को रोज़े मुआ़फ़ नहीं हो सकते।

प्रश्नः क्या बीड़ी सिगरेट पीने से रोज़ा टूट जाता है?

उत्तरः हाँ बीड़ी सिगरेट पियें या हुक़्क़ा या चिलम, रोज़ा टूट जाएगा, मुँह में खैनी रखने या पान में तम्बाकू खाने से भी रोज़ा टूट जायेगा।

प्रश्नः क्या सादा पान खाने से रोज़ा टूट जाता है?

उत्तरः हाँ सादा पान खाने से रोज़ा टूट जाता है, सादा पान जिस में कत्था चूना लगा होता है और डली पड़ी होती है उसके खाने से रोज़ा टूट जाता है। सिर्फ डली चबाने, कत्था चाटने से भी रोज़ा टूट जाता है कुछ लोग सादा पान चबाते हैं उससे भी रोज़ा टूट जाता है अलबत्ता मिस्वाक चाहे जिस दरख़्त की हो मिस्वाक करने से रोज़ा नहीं टूटता।

प्रश्नः क्या इन्हेलर खींचने से रोज़ा टूट जाता है?

उत्तरः इन्हेलर कई तरह के होते हैं जैसे गैस का इन्हेलर या कैप्सूल का इन्हेलर जो मुँह से खींचे जाते हैं एक नाक का इन्हेलर होता है इन सब से रोज़ा टूट जाता है।

प्रश्नः क्या नाक, कान और आँखों में दवा डालने से रोज़ा टूट जाता है?

उत्तरः नाक और कान में दवा डालने से रोज़ा टूट जाता है लेकिन आँखों में चाहे दवा डालें चाहे सुरमा लगाएं चाहे काजल लगाएं रोज़ा नहीं टूटता।

प्रश्नः क्या इन्जेक्शन लगाने से रोज़ा टूट जाता है?

उत्तरः इन्जेक्शन लगाने से रोज़ा नहीं टूटता।

प्रश्नः क्या क़ै हो जाने से रोज़ा टूट जाता है?

उत्तरः ख़ुद से क़ै हो जाने से रोज़ा नहीं टूटता चाहे थोड़ी हो या ज़ियादा, अलबत्ता क़सदन क़ै करने से अगर मुँह भर के हुई है तो रोज़ा टूट जायेगा ज़रा सी हुई है तो रोज़ा नहीं टूटेगा।

प्रश्नः कुछ लोग इफ़्तार का वक़्त हो जाने पर भी कुछ रुक कर इफ़्तार करते हैं ऐसा करना कैसा है?

उत्तरः जब यकीन हो जाये कि सूरज गुरूब हो चुका है तो फ़ौरन इफ़्तार करना चाहिए देर करना मकरूह है।

प्रश्नः क्या रोज़े की हालत में ग़ीबत करने से रोज़ा टूट जाता है?

उत्तरः ग़ीबत किसी की पीठ पीछे बुराई करने को कहते हैं ये बहुत बड़ा गुनाह है मगर इससे रोज़ा नहीं टूटता अलबत्ता मकरूह हो जाता है।

प्रश्नः क्या शुरु रमज़ान में पूरे रमज़ान के रोज़ों की नीयत की जा सकती है?

उत्तरः नहीं हर रोज़े की नीयत हर शाम को या रात में किसी वक़्त या सुब्ह को या दिन में दस ग्यारह बजे तक अलग– अलग करना ज़रूरी है सेहरी भी रोज़े की नीयत में शुमार है।

प्रश्नः हैज़ व निफ़ास वाली औरत के लिए रमज़ान के रोज़ों का क्या हुक्म है?

उत्तरः हैज़ व निफास वाली औरत जब पाक हो जाये तब रोज़े रखे और हैज़ व निफास के सबब जो रोज़े छूट गए हों बाद में उनकी क़ज़ा करे।

प्रश्नः क्या हैज़ व निफास वाली औरत ज़बानी कुर्आन पढ़ सकती है?

उत्तरः हैज़ व निफास वाली औरत कुर्आन नहीं पढ़ सकती न देख कर न ज़बानी कुर्आन को छू भी नहीं सकती अलबत्ता दुआएं पढ़ सकती है चाहे वह कुर्आन ही की क्यों न हो इसी तरह दुरूद व सलाम पढ़ सकती है।

प्रश्नः रमज़ान में तरावीह की नमाज़ का क्या हुक्म है?

उत्तरः रमज़ान में तरावीह की नमाज़ सुन्नते मुअक्किदा है ये नमाज़ इशा के फर्ज़ों और दो रकअ़त सुन्नतों के बाद दो–दो रकआ़त कर के बीस रकअ़त पढ़ी जाती है, हर चार रकअ़त के बाद ज़रा राहत लेते हैं जिसको तरवीहा कहते हैं बीस रकअ़तों में 5 बार तरवीहा होता है तरवीहा की जमा तरावीह है इसीलिए इस नमाज़ को तरावीह की नमाज़ कहते हैं। 20 रकअ़त तरावीह के बाद तीन रकअ़त वित्र वाजिब भी जमात से पढ़ना चाहिए। जिसकी तरावीह की नमाज़ छूट गई हो वह अकेले 20 रकअ़त पढ़ ले और ये सुन्नत तर्क न करे।

प्रश्नः ऐतिकाफ़ का क्या हुक्म है?

उत्तरः ऐतिकाफ़ सुन्नते मुअक्किदा अलल किफाया है यानी अगर बस्ती का कोई एक आदमी भी ऐतिकाफ़ कर लेगा तो पूरी बस्ती की तरफ से सुन्नत अदा हो जायेगी, लेकिन अगर किसी ने ऐतिकाफ़ न

किया तो पूरी बस्ती पर सुन्नत छोड़ने का गुनाह होगा।

20 रमज़ान की शाम को मग़रिब से पहले ऐतिकाफ़ की नीयत से मस्जिद में दाखिल हो और ईद का चांद दिखने से पहले शरई ज़रूरत जैसे खाना, गुस्ल, वुज़ू वग़ैरह जिस शरई ज़रूरत से निकलें ज़रूरत पूरी हो जाने पर फौरन मस्जिद आ जाएं किसी से बातें न करने लगें।

मस्जिद में फ़र्ज़ नमाज़ें जमाअ़त से पढ़ें अल्लाह तआ़ला तौफ़ीक़ दे तो नफ़्ल नमाज़ें पढ़ें खास तौर से तहज्जुद और इशराक़, रोज़ाना तिलावत करें, दुआएं मांगें दुरूद व सलाम पढ़ें, दुन्या की बातों से बचें नींद आए सो जाएं।

उलमा ने लिखा है कि औरतें भी अपने घर में कोई जगह खास करके ऐतिकाफ़ कर सकती हैं और ऐतिकाफ़ में अस्लन लैलतुलक़द्र में जाग कर इबादत करना मक़सूद होता है। लैलतुलक़द्र आख़िरी अ़शरे की ताक रातों में किसी एक रात को होती है ये हमेशा बदलती रहती है।

प्रश्नः क्या ज़कात रमज़ान ही में देना ज़रूरी है?

उत्तरः ज़कात रमज़ान में देना ज़रूरी नहीं है बल्कि साहिबे निसाब के माल का जब साल गुज़र जाये ज़कात फर्ज़ हो जाती है लेकिन मालदार का अपने माल का हिसाब इस तरह रखना कि कितने माल पर किस महीने में साल पूरा हुआ ये काम बड़ा मुश्किल है इसलिए मालदार साल में कोई एक महीना अपने माल के हिसाब के लिए मुक़र्रर कर लेता है और चुंकि रमज़ान के महीने में सवाब सत्तर गुना हो जाता है इसलिए मुसलमान मालदार अपने माल की ज़कात रमज़ान में अदा करते हैं यह तो बड़ी अच्छी बात है अल्लाह उनकी ज़कात कुबूल करे।

प्रश्नः सद–कए–फित्र ईद के दिन वाजिब होता है लेकिन क्या उसे रमज़ान में अदा कर सकते है?

उत्तरः सद–कए–फित्र अगर आख़िर रमज़ान में अदा कर दिया जाये तो ज़ियादा बेहतर है सवाब 70 गुना मिलेगा और ग़रीब मुसलमान उसको रोज़े की ज़रूरियात में भी ख़र्च कर सकता है और ईद की ज़रूरियात में भी।

प्रश्नः सद–कए–फित्र किस पर वाजिब होता है?

उत्तरः जो मुसलमान 612 ग्राम चाँदी या उसकी क़ीमत का मालिक हो उस पर सद–कए–फ़ित्र वाजिब होता है। सद–कए–फ़ित्र उस पर भी वाजिब होता है जो चाहे 612 ग्राम चाँदी या उसकी क़ीमत का मालिक न हो मगर इस क़ीमत का उसके पास ज़रूरत से ज़ियादा साज़ो सामान हो लेकिन ऐसे कम ही लोग मिलेंगे।

सद–कए–फित्र जिस पर लाज़िम होता है वह

अपनी तरफ़ से और अपनी नाबालिग़ औलाद की तरफ़ से अदा करे जो बच्चा ईद के दिन पैदा हुआ उसकी तरफ से सद–कए–फित्र वाजिब नहीं अलबत्ता जो बच्चा ईद की सुब्ह को सुबह सादिक़ से पहले पैदा हुआ उसकी तरफ से वाजिब है। बालिग़ औलाद अगर साहिबे निसाब हो तो वह अपना सदक़ा खुद अदा करे अगर साहिबे निसाब न हो तो उस पर कुछ नहीं अलबत्ता बाप अगर बालिग़ औलाद की तरफ़ से भी सदक़ा दे दे तो अदा हो जायेगा यही हुक्म बीवी का है बीवी अगर साहिबे निसाब हो तो अपना सदक़ा ख़ुद अदा करे लेकिन अगर शौहर बीवी का सदक़ा दे तो अदा हो जाएगा।

प्रश्नः एक आदमी का सद–कए–फ़ित्र कितना हुआ?

उत्तरः एक आदमी का सद–कए–फ़ित्र एक किलो 600 ग्राम गेहूँ या उसकी क़ीमत हुई।

प्रश्नः सद–क़ए–फित्र या ज़कात के मुसतहिक़ कौन लोग हैं?

उत्तरः सद–कए–फ़ित्र या जक़ात ऐसे ग़रीब मुसलमानों का हक़ है जो साहिबे निसाब न हों, जिन दीनी मदरसों में ग़रीब तलबा को मुफ़्त खाना दिया जाता है उन मदरसों में ज़कात या सद–कए–फित्र पहुँचाना ज़ियादा बेहतर है।

❖❖❖

इस्लाम के तीन

ने सृष्टि को किस प्रकार पैदा किया, फिर वही अल्लाह आखिरी बार भी पैदा करेगा, निःसंदेह अल्लाह हर चीज़ पर सार्मथ्य रखता है।

(सूरः अलअन्क़बूत 19–20)

अल्लाह ज़िन्दा को मुर्दा से निकालता है और मुर्दा को ज़िन्दा से और धरती की मुर्दा होने (सूख जाने) के बाद जीवन प्रदान करता है, अतः इसी प्रकार क़यामत में उठाए जाओगे।

(सूरः अर्रूम 19)

जारी.....

❖❖❖

रमज़ानुल मुबारक के .....

ईमान लाने का क्या मतलब है उन्होंने अर्ज़ किया कि अल्लाह और उसके रसूल को ज़ियादा इल्म है आपने फ़रमाया ईमान लाना यह है कि गवाही दो इसकी कि सिवा अल्लाह के कोई माबूद नहीं और मुहम्मद अल्लाह के पैगम्बर हैं और हुक्म दिया नमाज़ पढ़ने का ज़कात देने का और रोज़ा रखने का इन सबके बाद फ़रमाया कि इस की ख़बर अपने क़बीले वालों को भी कर दो।

(सहीह बुख़ारी)

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जो शख़्स रमज़ान के रोज़े और उस की रात में इबादत करे ईमानदार हो कर सवाब समझ कर, उसके अगले पिछले गुनाह सब बख़्श दिये जाते हैं और जो लैलतुल क़द्र में इबादत करे ईमान दार हो कर सवाब समझ कर उसके भी अगले गुनाह बख़्श दिये जाते हैं। जिन चार चीज़ों से रोका उसको रावी ने बयान नहीं किया है।

(बुख़ारी–तिर्मिज़ी)

❖❖❖

ताक़त व क़ूव्वत का ग़ुरूर

—डॉ0 सईदुर्रहमान आज़मी नदवी

—हिन्दी लिपिः सना ख़ान

हम इस वक़्त एक ज़ालिम और घमण्डी बादशाह के सामने हैं, एक ऐसे सरकश हुक्मरां के सामने जिस की आँखों पर तकब्बुर व सरकशी की ग़लीज़ चादर चढ़ी हुई है और जो अपनी हिमाक़त और कुन्दज़हनी की वजह से ख़ुदाई का दावेदार है और ''अना रब्बुकुमल अ़ाला'' का एलान कर रहा है, यह अपने वक़्त का सबसे बड़ा सरकश और ज़ालिम व मुतकब्बिर बादशाह फ़िरऔन है।

फ़िरऔन सरज़मीने मिस्र का हुकमरां, जिस ने पूरी क़ौम को ग़ुलाम बना रखा है और रिअ़ाया को इन्तिहाई बे दस्त व पा समझ कर ज़िल्लत व ग़ुलामी के बन्धन में जकड़ना चाहता है, वह फिरऔन जो अशरफ़ुल मख़लूकात इनसान को जानवर से ज़ियादा हैसियत देने को तैयार नहीं, और जिसने दुन्या में अपने ज़माने की सबसे अज़ीम उम्मत और अपने वक़्त की बुलन्द व बरतर क़ौम बनी इस्राईल को हमेशा के लिए जिल्लत के गढ़े में ढकेल देने के लिए पूरी क़ुव्वत सर्फ कर दी है, वह एक नबी की औलाद को ज़लील व रुसवा करना चाहता है और उस के लिए वह अपने आखिरी हथियार को इस्तेमाल कर रहा है।

लेकिन अल्लाह तआ़ला को फिरऔन की यह सरकशी, उस का इस्तेकबार और उस की हिमाक़त पसन्द नहीं आई, उसने चाहा कि उस क़ौम को इज़्ज़त व बुलन्दी के उस मरतबे पर क़ायम रखे जो उनका हक़ था और ग़ुलामी और ज़िल्लत की तारीकियों से निकाल कर एक ऐसी रोशनी उन को अता करे जो रहती दुन्या तक बाक़ी रहे और जो आने वाली क़ौमों के लिए मशअ़ले हिदायत बन सके, चुनांचे उस रोशनी का सबसे पहला नूर उसी क़ौम के एक नौ मौलूद बच्चे को अल्लाह तआ़ला ने अ़ता फरमाया जिनका नाम मूसा अलैहिस्सलाम है।

मूसा अलैहिस्सलाम मुख़्तलिफ़ आज़माइशों और इमतिहानात से गुज़रने के बाद अब नूरे नुबूव्वत से सरफराज़ हो चुके हैं। और रहमते इलाही उन पर साया फगन है वह फिरऔन से मुक़ाबला करने के जज़्बे से सरशार हैं, ज़ुल्म व तकब्बुर के ख़िलाफ़ बगावत पर आमादा हैं और इनसान को उसी के हक़ीक़ी मरतबे पर वापस लाने और ग़ुलामी की ज़न्जीर से नजात दिलाने के लिए पूरी तरह कमर बसता हैं, अल्लाह तआला ने उन को नुबूव्वत की अमानत अता फरमाई और हर मौक़े पर अपनी मदद उनके साथ रखी और बनी इस्राईल को फिरऔन की गुलामी से नजात दिलाने की जिम्मेदारी उन के सुपुर्द

कर दी और अपनी पूरी मदद का उन को यक़ीन दिलाया।

यक़ीन की बेपनाह कुव्वत और ईमान के जज़बे से सरशार हो कर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ज़ालिम फिरऔन के दरबार में पहुंचे और उस से क़ौम को आज़ाद करने का मुतालबा किया। ईमान की दअ़वत दी और खुदा–ए–वाहिद को मअ़बूद मानने का मुतालबा किया। फिरऔन ने मूसा अलैहिस्सलाम की यह जुरअत देख कर कहा कि ऐ–मूसा! क्या तुम वही शख़्स नहीं हो जिसकी हमने बचपन में परवरिश की और तुम एक मुद्दत तक यहाँ मुक़ीम रहे, उसके बावजूद जो कुछ तुम ने किया वह किसी से मख़फी नहीं है, बल्कि वह सरासर कुफ्राने निअ़मत और एहसान नाशनासी है।

मूसा अलै0 ने तल्ख़ लहजे में फरमाया कि बनी इस्राईल को तुम ने गुलाम बना लिया, यही वह तुम्हारा एहसान है जिसे तुम जता रहे हो, ऐ अल्लाह के बन्दों को गुलाम बनाने वाले ज़ालिम हुकमरां तूने मेरी क़ौम को गुलाम बनाया, उनको हक़ीर समझा और तरह तरह से उनकी तौहीन की, क्या यही तेरा वह अज़ीम एहसान है जो तू याद दिला रहा है। और एहसान मन्द होने का मुतालबा कर रहा है।

मूसा की हक़गोई से फिरऔन का दरबार गूंज उठा, और फिरऔन की ख़ुदाई लाजवाब हो कर रह गई, लेकिन सलतनत के गुरूर और इज़्ज़त व अज़मत के नशा ने फिरऔन के अन्दर इन्तिक़ाम की आग भड़का दी उसके दरबारियों ने उस आग को मज़ीद हवा दी, लोगों ने कहा कि क्या आप मूसा अलै0 और उनकी क़ौम को इसी तरह छोड़ देंगे, ताकि वह ज़मीन में फसाद बरपा करें, और वह आप और आपके माबूदों से मुँह मोड़ लें।

फिरऔन ने जवाब दिया कि वह दिन दूर नहीं जब कि हम उनसे उस का इन्तिक़ाम लेंगे और उनकी औरतों को छोड़ कर उनके तमाम मर्दों को मौत के घाट उतार देंगे और उनको हमारी बालादस्ती के सामने झुकना पड़ेगा।

मूसा अलै0 की क़ौम फिरऔन की यह धमकी सुन कर घबरा गई, हज़रत मूसा अलै0 ने उन को इतमिनान दिलाया और उनसे कहा कि तुम लोग अल्लाह से मदद तलब करो और सब्र करो और यह भी याद रखो कि ज़मीन अल्लाह की है वह जिस को चाहे उस का वारिस बनाए और नेक अन्जाम तो हमेशा अल्लाह से डरने वालों का रहा है मूसा अलै0 के ईमान की कुव्वत इस कदर बढ़ी हुई थी कि फिरऔन के जादूगरों ने जो ख़ालिस फिरऔन के परवरदह और उसकी रिआया थे और फिरऔन की खुदाई और उस की रुबूबियत का ऐतराफ करने वाले थे और मूसा अलै0 से मुकाबला करने के लिए पूरी तरह तैयार हो

शेष पृष्ठ .....32 पर

ईदुलफित्र, रोज़ा खोलने की ख़ुशी

—इदारा

ईद का चाँद दिखा रमज़ान के एक महीने के रोज़ों की पुर मशक़्क़त आ़ला दर्जे की इबादत मुकम्मल हुई, रमज़ान के पूरे महीने के उपवास परिश्रम भरी उत्तम उपासना समपन्न हुई तो ईदुलफित्र मनाने का आदेश हुआ ईदुलफित्र अर्थात रोज़ा खोलने की ख़ुशी अब तक दिन में रोज़ा रखने का आदेश था दिन में खाना पीना निषेध था मग़रिब के वक़्त रोज़ा खोला जाता था अब दिन में रोज़ा खोलने का आदेश हुआ ख़ुशी मनाने की अनुमति मिली अल्लाह तआला अपने प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम द्वारा मुसलमानों को साल में दो दिन ख़ुशी मनाने के दिये एक पहली शव्वाल को ईदुलफित्र का दिन दूसरा दस ज़िलहिज्ज ईदुल अज़हा का दिन।

दुन्या में ख़ुशी मनाने के विभिन्न तरीक़े हैं कुछ लोग बाजा बजा कर ख़ुशियाँ मनाते हैं इस्लाम में बाजा बजाना मना है इसलिए बाजा बजा कर ख़ुशी नहीं मनाना चाहिए, कुछ लोग ख़ुशी मनाने के लिए मदिरा (शराब) पीते हैं भंग आदि नशा करके खुशी मनाते हैं इस्लामी शरीअ़त में हर प्रकार का नशा पूर्णता वर्जित है हराम है इसलिए नशा कर के ख़ुशी मनाना ग़लत है फिर नशे में बुद्धि नष्ट हो जाती है अक़्ल जाती रहती है आदमी थोड़ी देर के लिए पागल हो जाता है फिर नशा स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है अतः ख़ुशी मनाने के लिए नशे से दूर रहना चाहिए। कुछ लोग नाच गा कर ख़ुशी मनाते हैं इस्लामी शरीअ़त (विधान) में नाचना गाना मना है अतः ख़ुशी मनाने के लिए नाचने गाने से दूर रहना चाहिए। कुछ लोग एक दूसरे पर पानी उछाल कर या रंग उछाल कर ठठ्ठे लगा लेते हैं ये तरीक़ा भी इस्लाम में मना है इस्लाम में ईद की ख़ुशी मनाने की जो शिक्षा दी गई है वह ये है:—

आप ईद के दिन बहुत सवेरे उठें फज्र की नमाज़ जमाअ़त से अदा करें और अब ईद की ख़ुशियां मनाने की इस्लामी तरीक़े से शुरुआ़त करें, गुस्ल (स्नान) करें दातून से दाँत साफ करें गुस्ल कर के अल्लाह तआ़ला ने जो कपड़े दिये हों साफ सुथरे या पुराने पहनें कुछ ख़ुशबू लगायें कुछ मीठा खाने से हरमन प्रसन्न होता है अतः कुछ खाएं ख़जूर खाएं, हलवा खाएं सिवय्याँ खाऐ अब अगर आप पर फित्रा देना वाजिब है और आपने रमज़ान में अदा नहीं किया है तो आज अदा करें अब अपने रब की बड़ाई अरबी के इन शब्दों के साथ अपने मन में गुनगुनाएं अल्लाहु

अकबर अल्लाहु अकबर, ला इलाह इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर वलिल्लाहिलह्म्द (अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह के सिवा कोई मअ़बूद नहीं अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है तारीफ़ के लाएक़ (प्रशन्सा योग्य) अल्लाह ही है।

ये कलमा गुनगुनाते हुए जहां ईद की नमाज़ पढ़ना है मस्जिद या ईदगाह वहां पहुंचे वहां अपने पराये दूर व नज़दीक के मिलने वाले दोस्त अहबाब दिखेंगे उनको देख कर मन प्रसन्न होगा फिर ईद की सामूहिक नमाज़ इमाम के पीछे अदा करें खुत्बे सुनें अल्लाह तअ़ाला से अपने लिए अपनों के लिए अपने देश के लिए तमाम आलम के लिए अल्लाह तअ़ाला से भलाई की दुआऐं माँगें फिर दोस्त अहबाब से मिल कर एक दूसरे को ईद की मुबारक बाद दें घर वापस आयें अब पड़ोसियों के यहां रिश्तेदारों के यहां जा कर मुबारक बाद दें और जो कुछ वह खिलायें ख़ुशी से ख़ायें अपने यहां जो दोस्त अहबाब पड़ोसी आएं उनका इस्तेक़बाल करें उनको कुछ मीठा आदि खिलाएं इस्लामी शिक्षाओं में ईद की ख़ुशी मनाने का यही अच्छा तरीक़ा है इसी तरह ईद की ख़ुशियाँ मनाएं अल्लाह का शुक्र अदा करें और गुनाहों से बचें अब अल्लाह के रसूल पर दुरूद व सलाम पढ़ लें सल्लल्लाहु अलननबी व अ़ला आलिहि व अज़वाजिही व असहाबही व बारका व सल्लम।

❖❖❖

ताक़त व क़ूव्वत का.....

कर आये थे, उन्होंने भी मुक़ाबला की ताब न ला कर फिरऔन के भरे दरबार में साफ–साफ ऐलान कर दिया कि हम मूसा अलै0 और हारून के रब पर ईमान लाए।

''जादूगर सजदे में गिर गये और उन्होंने कहा कि हम रब्बुल आलमीन पर ईमान लाए जो मूसा और हारून का रब है''–

फिरऔन यह कैफियत देख कर गुस्से से पागल हो गया और उसने जादूगरों को धमकी दी कि तुम ने उस शहर के लोगों को निकालने की साज़िश की है तो उसका अंजाम तुम को भी मालूम हो जायेगा। तुम्हारे हाथ पैर मुख़ालिफ सिम्त से काट दूंगा और तुम सब को सूली पर चढ़ा दूँगा।

ईमान लाने वाले जादूगरों ने निहायत बहादुरी और जुरअत के साथ साफ–साफ यह ऐलान कर दिया कि ''तुम को जो कुछ करना हो कर लो, ज़ियादा से ज़ियादा तुम हमारी इस दुन्यावी ज़िन्दगी का खातिमा कर दोगे''।

इसके बाद फिरऔन का जो ह़श्र हुआ वह किसी से मखफी नहीं यह मुख़्तसर सी कहानी है एक उभरती हुई क़ौम के मिटने और मिटती हुई क़ौम के उभरने की, जो इबरतों से लबरेज़ है और जिसमें क़ौमों के उरूज़ व ज़वाल की पूरी तारीख़ मौजूद है।

❖❖❖

लॉकडाउन और हमारी ज़िम्मेदारी

—मौलाना जुबैर अहमद नदवी

इस समय पूरी दुन्या को क्रोना वायरस जैसी घातक बीमारी ने अपनी चपेट में ले रखा है। लाखों लाख लोग इस से पीड़ित हैं तो तीन लाख के क़रीब इस के शिकार हो कर अपनी जान गवां चुके हैं। आर्थिक रूप से सम्पन्न देश सबसे ज़्यादा इस के शिकार हैं। विज्ञान और प्रौद्योगिकी में शिखर पर रहने वाले देश इस बीमारी की रोक थाम में विवश हैं। अमेरीका, योरोप के लाखों लोग ज़िन्दगी और मौत से लड़ रहे हैं।

हमारा महान देश जो आर्थिक, और आयुर्विज्ञान के क्षेत्र में तेज़ी से आगे बढ़ रहा था आज इस बीमारी के कारण बुरी तरह से प्रभावित हुआ है और इस महामारी का उपचार अभी तक खोजने में असमर्थ है, और ढाई लाख के क़रीब यहाँ भी लोग इससे पीड़ित हैं और हज़ारों लोग अपनी जान गवां चुके हैं। हर स्तर के लोग इससे पीड़ित हैं। डॉक्टर, इंजीनियर, नेता, धनी, निर्धन अतः सभी इससे परेशान हैं।

विश्व स्वास्थ संगठन के निर्देशों के अनुसार इससे बचने के लिए सामाजिक दूरी एक महत्वपूर्ण उपाय हो सकता है। इसके मद्देनज़र विभिन्न देशों ने अपने यहाँ आंशिक या पूर्ण रूप से ताला बंदी (लॉक डाउन) का ऐलान किया और इसे सख़्ती से लागू किया। इसका किसी हद तक लाभ भी हुआ और इस बीमारी की चेन तोड़ने में सफलता मिली।

हमारे देश में भी पूर्ण लॉक डाउन लागू हुआ और जन—जीवन रुक सा गया, परन्तु इतनी बड़ी आबादी वाले देश में जहां करोड़ों की संख्या में मज़दूर रोज़ कमा कर खाने वाले हों, वहां लॉक डाउन से बड़ा नुकसान भी हुआ, करोड़ों लोग भुखमरी के शिकार हुए, लाखों लोग बे घर हुए, हज़ारों लोग मांसिक बीमारी के शिकार हुए, निजी कम्पनियों में काम करने वाले लाखों लोग अपनी नौकरी से हाथ धो बैठे, लाखों लोगों को प्लायन करना पड़ा जिसकी वजह से वे भी कोरोना से ग्रसित हो गये, इस प्लायन में सैकड़ों ने अपनी जान गवां दी। लाखों करोड़ पति कंगाल हो गये।

निः संदेह सरकार ने लोगों की आर्थिक सहायता के लिए विभिन्न योजनाओं का ऐलान किया परन्तु ज़मीनी स्तर पर उसका असर देखने को नहीं मिल रहा है। आजीविका प्राप्त करने के लिए बड़ी—बड़ी डिग्रियों वाले मज़दूरी करने पर विवश हैं और ग़रीब अनपढ़ मज़दूर भीख मांग रहे हैं। सलाम और हज़ार बार सलाम उन समाज सेवी संगठनों और लोगों को जिन्होंने ऐसे हालात में अप्रवासियों और ग़रीबों की दिल खोल कर मदद की और अपनी जान जोखिम में डाल कर उनकी सेवा की।

प्रश्न यह उठता है कि लॉक डाउन से क्या लाभ हुआ और क्या हानि! अगर भारत के परिपेक्ष में देखा जाये तो महामारी से जितने

शेष पृष्ठ .....36...पर

क्रोना को या रब तू अब ले उठा —इदारा

क्रोना से दुन्या परेशान है - हर इक इल्म वाला भी हैरान है
न सूझी क्रोना की अब तक दवा - दवा से हर इक शख़्स अन्जान है

सुझा दे क्रोना की या रब दवा
इलाही क्रोना को अब ले उठा

क्रोना की अब तक मिली न दवा - न मायूस हों और खोजें दवा
खुदा नाम ले कर के खोजें दवा - मिलेगी मिलेगी यक़ीनन दवा

सुझा दे क्रोना की या रब दवा
खुदाया क्रोना को अब ले उठा

लखोंखा क्रोना से पीड़ित हुए - तो लाखों ही इससे अजीवित हुए
खुदाया खुदाया खुदाया खुदा - शरण अब क्रोना से तेरी मिले

सुझा दे क्रोना की या रब दवा
क्रोना को या रब तू अब ले उठा

न ईशवर को भूले न रब को कोई - न जुल्म अब किसी पर करे याँ कोई
क्रोना भी इक दिन चला जाएगा - मेरा रब जो चाहे तो जाए अभी

क्रोना की या रब सुझा दे दवा
इलाही क्रोना को अब ले उठा

जो आया उसे तो है जाना ज़रूर - क्रोना को इक दिन है जाना ज़रूर
वो जाएगा कब वक़्त पोशीदा है - मगर उसको इक दिन है जाना ज़रूर

क्रोना की या रब सुझा दे दवा
दवा जो क्रोना से दे वह शिफा

रहम दिली

—मौलाना नजमुस्साकिब अब्बासी नदवी

पवित्र कुरआन में है ''जो क्षमा करे और हुस्ने सुलूक (सुलह) करे तो उसका सवाब अल्लाह के ज़िम्मे है''।

इस्लाम में क्षमा करने और सुलह करने की बड़ी ताक़ीद है। हो भी क्यों न इस्लाम का अर्थ ही अमन व शान्ति है।

बहुत पहले की बात है, एक बुज़ुर्ग थे ज़ैनुल आबिदीन रह0 वह जननायक हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के खानदान से थे। एक बार किसी ने उन्हें बड़ा बुरा—भला कहा, उनके चाहने वालों ने उस आदमी को रोकना चाहा। हज़रत ने अपने लोगों को रुकने को कहा। लोग एक तरफ़ हो गये तो वह उसके पास गये और कहा भाई! मेरी बहुत सी कमियां और बुराइयाँ तो छुपी हुई हैं वह तो तुम्हें मालूम नहीं जो कुछ तुम कह रहे हो मैं तो उससे भी कहीं बुरा हूँ। ये कह कर आप चल दिये, मगर फिर पलट कर आये और उससे कहा जो कुछ तुम कहते हो कहते रहो लेकिन कभी मेरी ज़रूरत पड़े तो याद करना, मुझे तुम्हारी सहायता करके बड़ी ख़ुशी होगी।

अब तो वह आदमी ढेर हो गया बोलती बन्द हो गई। बड़ी अजीब बात है आज यदि कोई किसी को गाली देता है तो लोग उसको उससे भी बुरी गालियां दे कर उसकी बोलती बन्द करने की कोशिश करते हैं। एक अल्लाह वाले को एक शख़्स गाली पे गाली दिये जा रहा है उनको प्रेम करने वालों ने कहा आप कुछ बोलते क्यों नहीं। अल्लाह वाले ने कहा, उसकी तहज़ीब ही ऐसी है उसने अपनी संस्कृति से कुछ नहीं सीखा, लेकिन मेरी तहज़ीब ने ये नहीं सिखाया कि गाली का जवाब गाली से दिया जाये बल्कि चुप रह कर या सहनशील रह कर उसका जवाब दिया जाये तो फायदे से खाली नहीं होता बल्कि ये समाज में एक अच्छी सभ्यता व तहज़ीब की बुन्याद डालता है। जाहिल या ज़ालिम से नर्मी से बात करना झुकना नहीं कहलाता बल्कि इससे अच्छाई की तरफ़ उसके आने की उम्मीद बढ़ जाती है।

ख़ैर! हज़रत ज़ैनुल आबदीन ने देखा कि वह बेचारा शर्मिंदा हो रहा है, तो ख़ुद भी शर्मिन्दा होने लगे, तुरन्त अपना कुर्ता उतार कर उसे दिया और एक हज़ार दिरहम की रक़म दी।

पहले ही ढेर हो चुका वह शख़्स अनायास पुकार उठा ''निःसन्देह आप हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के घराने के एक सदस्य हैं। आप ऐसे न होंगे तो फिर कौन होगा?

इसी तरह एक क़िस्सा है एक आदमी पीठ पीछे उनकी बुराई करता था। एक शख़्स ने ये बात हज़रत ज़ैनुल आबदीन को बताई। हज़रत ने पूछा, क्या गालियाँ देता है? उसने कहा हाँ, हज़रत जैनुल आबदीन ने कहा चलो उसके पास चलते हैं। दोनों उसके यहाँ पहुंचे और हज़रत ज़ैनुल आबदीन ने बुरा–भला कहने वाले व्यक्ति से कहा, तुमने जो कुछ भी मेरे बारे में कहा, यदि वह सच है तो अल्लाह मुझे क्षमा करे यदि वह झूठ है तो अल्लाह तुम्हें माफ करे।

इतना कह कर हज़रत ज़ैनुल आबदीन लौट आये, गालियाँ देने वाला उनकी बातें सुन कर कुछ लम्हे तक बुत बना रहा।

आज कल ऐसी बातें कोरी कल्पना सी लगती हैं, लेकिन जो अल्लाह के सच्चे और अच्छे बन्दे होते हैं वह ऐसे ही होते हैं।

❖❖❖

लॉक डाउन और .....

लोग परेशान नहीं हुए उससे अधिक लोग लॉक डाउन से परेशान हुए, हमारा देश जो प्रगतिशील देश है जहाँ जी0डी0पी0 ऊपर ले जाने की आवश्यकता है आज शून्य से भी नीचे जा चुकी है, आर्थिक तंगी के कारण नैतिक पतन तेज़ी से बढ़ा है चोरी–डकैती की घटनाएं बढ़ती जा रही हैं। स्कूल कॉलेज बंद होने के कारण युवा शक्ति जो इस देश की बड़ी ताकत है बुरी तरह प्रभावित हुई है, अवसाद का शिकार हो कर एक बड़ी संख्या निकृष्ट हो रही है।

यह सारी परिस्थितियां हमारे देश को (जो विश्व गुरु बनने को सोच रहा था) बहुत पीछे धकेलने वाली हैं और अग्रिम पंक्ति तो दूर इस को अपनी पुरानी पंक्ति में खड़ा होने में भी दसियों साल लग सकते हैं, जैसा कि आर्थिक और सामाजिक विश्लेषकों का मानना है।

अतः सरकार को चाहिए कि कोई भी क़दम उठाने से पहले उसकी पूरी तैयारी कर ले और परिणाम पर नज़र रखते हुए कोई भी निर्णय ले।

ऐसे हालात में हमें अल्लाह तआला से अपने गुनाहों से तौबा करना चाहिए और इन फुर्सत के दिनों में अल्लाह के ज़िक्र और इबादत में ज़ियादा से ज़ियादा वक़्त गुज़ारना चाहिए ताकि अल्लाह की नाराज़गी कम हो और इस महामारी से पूरी मानव जाति को निजात मिले। ◆◇◆

क़ितआ़ (किता)

रब से करें महब्बत, रब की करें इताअ़त
हो शिर्क से भी नफ़रत, हो कुफ़्र से भी नफ़रत
हुब्बे नबी हो दिल में, उन की करें इताअ़त
बिदअ़त से दूर रह कर, छोड़ें न कोई सुन्नत
अस्हाब और औलाद और अज़वाजे नबी से भी
हो हुब्ब का तअल्लुक़ इन अहबाबे नबी से भी
लाखों सलाम रहमत प्यारे नबीये पाक पर
उनकी सारी आल पर और सब अस्हाब पर

तबलीग़ी जमात- बुरी नहीः मगर बदनाम हो गई!

—डॉ0 हैदर अली खाँ

मशहूर कहावत है ''बद अच्छा—बदनाम बुरा'' बद अर्थात बुरा। बुरा होना अच्छा है किन्तु ''बदनाम'' हो जाना और बुरा है। कभी कभी बिना ख़ता (अपराध) के भी सज़ा मिल जाती है। जबरा मारे, रोने न दे। देश में जो समझदार लोग तबलीग़ी जमात के बारे में थोड़ा भी जानते हैं वे जानते हैं कि जमात के लोग ''नेक'' होते हैं, लेकिन उनका दुर्भाग्य है कि भारत में वे बदनाम हो गए हैं। यहां की वर्तमान सरकारों तथा गोदी मीडिया ने ''मीडिया ट्रायल'' कर उन्हें सख़्त से सख़्त सज़ा का ''पात्र'' बना दिया है। उल्लेखनीय है कि जमातियों के मीडिया द्वारा चरित्र हनन से क्षुब्ध हो कर मौलाना मदनी ने उच्चतम न्यायालय का दरवाज़ा खटखटाया है।''

80 वर्ष के जीवन काल में पाँच दिनों तक जमात के साथ गुज़ारा, समय समय पर मेरे घर पर आकर और मुसलमानों के साथ मुझे भी मस्जिद में, जहां उनकी शिक्षा होती रहती, दावत दे जाते। मैं देखता कि ये ''सन्यासी प्रवृत्ति के लोग हैं। अपना घर बार, कारोबार, बाल—बच्चे छोड़ कर एक दिन से लेकर 40 दिनों के लिए अपने खर्चे पर निकल जाते हैं। इस बीच ''इस्लाम'' जो कठोर अनुशासन का धर्म है, की सच्ची अपेक्षा का पाठ पढ़ाते हैं तथा व्यवहार में उसको लाने का प्रयास करते हैं, जमीअतुल उलेमा—ए—हिन्द के महासचिव मौलाना महमूद मदनी, मुझे तथा अन्य अनेक लोगों को विश्वास नहीं होता कि उनका कोई सदस्य उस स्तर की हरकत कर सकता है जो जैसा कि ''लांछन'' लगाया जा सकता है। मालिक के आगे हर इन्सान की कुकृति की जवाब देय है। गलत ''तोहमत'' या ''लांछन'' से उन्हें डरना चाहिए।

दिल्ली की तबलीग़ी जमात के मरकज़ में जो कुछ हुआ। उसके लिए सरकार भी ज़िम्मेदार है किन्तु वे अपनी ज़िम्मेदारी से बचने और बिचारे तबलीग़ी जमातियों को पूर्णतः दोषी सिद्ध करने का प्रयास कर रहे हैं। हाल—फिल हाल देश की मीडिया का एक बड़ा भाग ''सच'' नहीं परोस रहा है। उस का साथ सोशल मीडिया भी बड़े पैमाने पर दे रहा है। गोयाबेल के अनुसार किसी झूठ को बार—बार दोहरा दिया जाए तो वह सच हो जाता है। इस प्रकरण में ऐसा ही होता हुआ प्रतीत हो रहा है।

''सत्य'' की ही जीत होती है। देखना है कि इस प्रकरण में सच की जीत कब होती है?

भारत में तबलीग़ (धर्म आचरण) का काम 1927 में सूफी सिफत मुहम्मद इलियास ने दिल्ली के निकट हरियाणा के मेवात से शुरु किया था यह दुन्या के 150 से 195 देशों में कार्य कर रहा है। वीकिपीडिया के अनुसार 12 से 15 करोड़ लोग इस के पैरोकार हैं। यह जमात धर्म परिवर्तन हेतु तनिक भी प्रयास नहीं करती वरन् इस्लाम के मानने वालों को ही

शेष पृष्ठ .....40...पर

मधुमक्खियों के शरीर की रचना

—अबरार अहमद

मधुमक्खी पालन के लिए मधुमक्खी की शरीर रचना के विषय में थोड़ी बहुत जानकारी अवश्य होनी चाहिए। मधुमक्खियों से मनुष्य हज़ारों वर्षों से परिचित है। जन्तु विज्ञान के अनुसार मधुमक्खी का वंश एपिडी, जाति एपिस तथा समुदाय हाइनोप्टिरा है।

मधुमक्खी का कार्य फूलों से मकरंद (फूलों का रस) और पराग लेना है। मकरंद को गाढ़ा करके मधुमक्खियाँ मधु का निर्माण करती हैं।

मधुमक्खियों के परिवार में तीन प्रकार की मक्खियाँ होती हैं—

1. रानी :—जो अण्डे देती है।
2. नरः— जो रानी को गर्भित करता है।
3. श्रमिकः— जो अन्य सारे काम करती है।

श्रमिक मधुमक्खी के शरीर के तीन मुख्य भाग होते हैं— 1. सिर 2. धड़ 3. पेट।

सिरः- एक जोड़ा जो स्पर्श अंग, जिससे मधुमक्खियाँ महसूस करती हैं और दूसरी मधुमक्खियों से अपने मन की बात प्रकट कर सकती हैं। एक जोड़ा बड़ी—बड़ी मिश्रित आँखें, तीन छोटी—छोटी सरल आँखें, मुँह तथा अन्य शेष भाग होते हैं। इन्हीं के द्वारा मधुमक्खी वस्तुओं को पहचानती और सूँघती है।

सिर के दोनों किनारों पर बड़ी—बड़ी मिश्रित आँखें होती हैं। प्रत्येक मिश्रित आँख कई छोटी—छोटी आँखों से मिल कर बनी होती है।

छोटी आँखों के द्वारा प्रकाश के हल्के और तेज़ होने का ज्ञान होता है।

चेहरे के निचले में मुँह होता है जो द्रव पदार्थों को चूसने का काम करता है।

ऊपरी होंठ कुछ ढीला सा होता है, जिसकी तह पर चिकनी और पतली परत सी होती है। जिसमें चखने के अंग रहते हैं। ऊपरी होंठ के अगल बगल में दो मज़बूत जबड़े होते हैं जो कड़े पदार्थों को काटते हैं।

नीचे वाले होंठ के बढ़े हुए भाग को सूँड कहते हैं। सूँड के बीच में लम्बी जीभ होती है, जिस पर रोयें होते हैं।

सम्पूर्ण अंग फूलों का रस चाट कर और फिर चूस कर पेट की मधु थैली में ले जाने के लिए सुविधाजनक होता है।

धड़ः- दूसरा भाग धड़ है, जिस पर चलने और उड़ने के समस्त अंग निर्भर रहते हैं वे यह हैं— दो जोड़े पंख और तीन जोड़े पैर। पंखों के उड़ने की शक्ति पुट्ठों पर निर्भर रहती है। मधुमक्खियों के चार पंखों में से एक ओर के दो पंख एक दूसरे में इस प्रकार फंसाये जा सकते हैं कि वे एक पंख की तरह काम करें। परन्तु जब मधुमक्खी छत्ते के कोठे में घुसती है तो एक पंख,

दूसरे से अलग हो कर एक दूसरे पर चढ़ जाते हैं और इतने सकरे हो जाते हैं कि मधुमक्खी को कोठे में जाने में कोई रुकावट नहीं होती। पंख में सदा रक्त संचार हुआ करता है, परन्तु यदि किसी कारण वश पंख कट जायें तो कटी नसों का रक्त तुरंत जम जाता है और वहां से रक्त का रिसाव नहीं होता।

मधुमक्खी के प्रत्येक पैर पर पाँच गाँठें होती हैं, अंतिम गाँठ फिर पाँच छोटे–छोटे भागों में बंटी होती है, जिस पर एक जोड़ा नाखून और मध्य में चिपचिपी गद्दी होती है, जिसके कारण मधुमक्खी खुदरे तथा चिकने दोनों प्रकार के धरातल पर चढ़ सकती है।

कड़े बालों की छोटी–छोटी झालर जो उन पैरों के एक अंश पर भीतर की ओर होती है *Eye Brush* कहलाती है जिससे मधुमक्खी अपनी मिश्रित आँखों को साफ करती है।

पैर के अन्य स्थान पर जमे हुए लम्बे लम्बे बालों को पराग ब्रश कहते हैं जिनको शरीर से पराग को दूर करने के लिए उस समय उपयोग किया जाता है, जब मधुमक्खी पराग इकट्ठा करके अपने छत्तों में जमा करती है।

पहली गाँठ पर भीतर की ओर बालों का एक अर्द्ध वृत्ताकार समूह होता है, जिनसे श्रृंगों को साफ़ करने का काम लिया जाता है। बीच वाले पैरों पर घने बाल होते हैं जो आगे के पैरों के लिए पराग ब्रश का काम करते हैं।

एक गाँठ के भीतरी भाग के अंत में एक काँटा होता है, जो मोम थैली से मोम निकालने का काम करता है। मोम थैली पेट के निचले भाग में होती है।

प्रत्येक पैर में एक गाँठ का बाहरी पृष्ठ चिकना, कुछ अर्द्ध गोलाकार और लम्बे लम्बे बालों की झालर सहित होता है। बाल बाहरी तरफ़ कुछ मुड़े हुए होते हैं। इन सब के मिलने से पराग टोकरी बनती है। फूलों से पराग ग्रहण करते समय मधुमक्खी इसी हिस्से में पराग जमा करती है।

पेटः– पेट के दस भाग होते हैं, जो अति सूक्ष्म होने के कारण नंगी आँखों से देखे नहीं जा सकते। इसके मुख्य भाग–गंधमय ग्रंथि, मोम ग्रंथि और डंक होते हैं।

गंध ग्रंथि से एक विशेष गंध निकलती है, जिससे मधुमक्खियाँ अपने कुटुम्ब की अन्य मधुमक्खियों को पहचानती हैं। यदि यह पहचान न होती तो अन्य छत्तों की मधु मक्खियाँ आकर किसी कुटुम्ब के परिश्रम से संचित किये मधु को आसानी से चुरा ले जातीं।

जब कुटुम्ब का एक अंश कहीं अन्यत्र बसने के लिए बाहर जाता है, तब इसी गंध ग्रंथि का उपयोग होता है।

यही नहीं जब कुछ मधुमक्खियों को कहीं मकरंद या पराग विशेष का अच्छा क्षेत्र मिल जाता है, तो वे वहां अपनी गंध खूब फैला देती हैं, जिससे कुटुम्ब की अन्य मुधमक्खियों को वहां

अत्याचार से बड़े-बड़े शासकों के दिये बुझ गये

—हज़रत मौ0सै0 अबुल हसन अली हसनी नदवी रह0 —हिन्दी अनुवादः राशिदा नूरी

मैं बड़ी क्षमायाचना के साथ इतना बता दूं कि मैं लिखने पढ़ने वाला आदमी हूँ, लेकिन मेरी रुचि का केन्द्र दो विषय हैः एक मज़हब और उसमें भी तुलनात्मक अध्ययन दूसरा इतिहास, और इतिहास किसी एक भाग का नहीं, अपितु पूरे विश्व का इतिहास, मैंने अरबी, फारसी, उर्दू और अंग्रेज़ी में इसका बड़ा भाग देखा है और पढ़ा है, इस अध्ययन के परिणाम में मैं इस वास्तविकता तक पहुंचा हूँ कि संसार के धर्मों में सबसे अधिक किसी चीज़ पर सहमति है तो वह ये है कि अत्याचार बहुत बुरी चीज़ है और वह इस संसार को जन्म देने वाले को अप्रिय है और जहां तक इतिहास का सम्बन्ध है वह बताता है कि इस अत्याचार से बड़े—बड़े शासकों के दिये बुझ गये हैं और समाज पर पतझड़ की ऐसी आँधी चली कि उन पर पूर्णतः पतन आ गया है और पूरे वैज्ञानिक, साहित्यिक तथा उत्तम कृति सब माटी हो गये हैं।

❖❖❖

तक पहुंचने में सुविधा होती है। अर्थात आगे वाली मुधमक्खियों की गंध से पीछे वाली मधुमक्खियाँ सही दिशा पाती हैं।

मोम ग्रंथि पेट के पाँचवें, छठे और सातवें भाग के निचली तह में होती है। इन ग्रंथियों से जो मोम निकलता है, वह द्रव रूप में होता है और इससे मधुमक्खियाँ जैसा ढ़ाँचा चाहती हैं, तैयार करती हैं। जब मोम कड़ा होने लगता है, तो मधुमक्खियाँ इससे छत्तों के कोठे तैयार करती हैं।

मधुमक्खी के अन्य अंगों में वह नली जिसके द्वारा भोजन मुँह से पेट तक पहुंचता है, भोजन नली कहलाती है। यह सिर व धड़ में तो सीधी रहती है परन्तु पेट में सीधी नहीं रहती। धड़ तक यह पतली होती है पर पेट में आ कर यह फूल कर थैली के आकार की हो जाती है। इस थैली को मधुकोष कहते हैं, जिसमें कि फूलों का रस संचित होता है।

❖❖❖

तबलीगी जमात.....

कठोर अनुशासन पर चलाने का प्रयास करती है ताकि मोक्ष की प्राप्ति हो सके।

हम आशा करते हैं कि देशवासी गलत कुप्रचार में नहीं आएंगे वरन् "सत्यता" को समझने का प्रयास करेंगे।

अन्देशा इस बात का है कि कोरोना तो देर सवेर चला जायेगा किन्तु पैदा की जा रही घृणा देश के लिए घातक सिद्ध होगी। अतः कोरोना को भगाने के लिए हम सब को मिल जुल कर भगीरथ प्रयास करना है। हमें विश्वास है कि देश जीतेगा, कोरोना भागेगा। ◆◇◆

नदवतुल उलमा
पोस्ट बाक्स न0 93, टैगोर मार्ग,
लखनऊ -226007 (भारत)

ندوۃ العلماء
پوسٹ بکس ۹۳۔ ٹیگور مارگ
لکھنؤ۔ ۲۲۶۰۰۷ (الہند)

दिनांक 25.04.2020 تاریخ _____

अहले खैर हज़रात से!

अल्लाह तआला का शुक्र व एहसान है कि हज़रत मौलाना सैय्यद मो0 राबे हसनी नदवी दामत बरकातुहुम की सरपरस्ती में दारुल उलूम नदवतुल उलमा अपनी इल्मी व दीनी तालीमी व तरबियती ख़िदमत अंज़ाम दे रहा है, और उन बहुमूल्य सिद्धान्तों एवं नियमों को सीने से लगाये हुए है जिनके लिए नदवतुल उलमा को स्थापित किया गया था, यानी नये ज़माने में इस्लाम की मुअस्सिर और सही तर्जुमानी, दीन व दुन्या की व्यापकता और इल्म व रुहानियत के एकता की कोशिश, फितन–ए–लादीनियत और ज़ेहनी इरतिदाद का मुकाबला, इस्लाम पर एतिमाद और उलूमेइस्लामिया की बरतरी व इम्तियाज़ का ऐलान व इज़हार, दीने हक से वफादारी और शरीअत पर इस्तिक़ामत।

आपसे हमारी अपील है कि वक़्त की इस ज़रूरत और दारुल उलूम नदवतुल उलमा की इफ़ादियत को समझते हुए पूरी फराख़दिली, फ़य्याज़ी और हिम्मत से काम ले कर इन तमाम कामों में भरपूर तआउन व मदद फरमायें कि हिन्दुस्तान में दीन के किलों की हिफ़ाज़त का इससे बेहतर रास्ता और इससे ज़ियादा पायदार कोई सदक़–ए–जारिया नहीं।

जैसा कि आप को मालूम है कि रमज़ानुल मुबारक के मौक़े पर दारुल उलूम नदवतुल उलमा के असातिज़ा, सुफ़रा व मुहस्सिलीन आप हज़ारात की ख़िदमत में हाज़िर हो कर सद्क़ात व जक़ात व चन्दे की वसूलयाबी का काम अंजाम देत हैं लेकिन इस वक़्त पूरे मुल्क में क्रोना वायरस की वजह से लॉकडाउन है, ऐसे हालात में सफ़र करना ना मुम्किन है इसलिए आप के चन्दे की वसूलयाबी बैंक द्वारा ही मुम्किन है।

इसलिए आप हज़रात से अपील है कि अपने सद्क़ात व अतियात चेक/ड्राफ्ट और ऑन लाइन, नदवतुल उलमा के खातों में भेजें ऐसे नाज़ुक और मुश्किल हालात में नदवतुल उलमा के साथ आप का तआउन निहायत अहमियत रखता है, अल्लाह तआला हम सब की कोशिशों को कबूल फ़रमाये और उनको हमारे लिए ज़ख़ीर–ए–आख़िरत बनाये। आमीन

(मौलाना) मुहम्मद हमज़ा हसनी नदवी
नायब नाज़िम नदवतुल उलमा

(मौलाना डॉ0) तक़ीउद्दीन नदवी
मोतमद तालीम नदवतुल उलमा

(प्रोफेसर) अतहर हुसैन
मोतमद माल नदवतुल उलमा

(मौलाना डॉ0) सईदुर्रहमान आज़मी नदवी
मोहतमिम नदवतुल उलमा

नोटः चेक/ड्राफ्ट पर केवल यह लिखें:
NADWATUL ULAMA
और इस पते पर भेजें:
NAZIM NADWATUL ULAMA
Nizamat Office, Nadwatul Ulama.
Tagore Marg, Lucknow-226007 (UP)

बरा–ए–करम अतियात भेजने के बाद रसीद हासिल करने के लिए फ़ोन नं0 **7275265518** पर इत्तिला ज़रूर करें।

नदवतुल उलमा
A/C No. 10863759711 (अतियात)
A/C No. 10863759766 (ज़कात)
A/C No. 10863759733 (तअ़मीर)
SBI MAIN BRANCH, LUCKNOW
(IFSC: SBIN0000125)

नोटः नदवतुल उलमा, लखनऊ को दिये गये चन्दे को **Section 80G income Tax act 1961**के तहत छूट प्राप्त होगी।
Online Donation Link: https://www.nadwa.in.donation/ Website: www.madwa.in, Email: nizamat@nadwa.in

उर्दू सीखये

—इदारा

हिन्दी की मदद से उर्दू पढ़ये

ईद आई ईद की ख़ुशियां मनाओ दोस्तो
गुस्ल कर, कपड़ों को बदलो ख़ुशबू लगाओ दोस्तो

عید آئی عید کی خوشیاں مناؤ دوستوں
غسل کر کپڑوں کو بدلو خوشبو لگاؤ دوستوں

ख़ुर्मा खाओ या सिवैय्यां कोई मीठा खाओ तुम
फिर दोगाना पढ़ने को सीधे मुसल्ला जाओ तुम

خرما کھاؤ یا سویاں کوئی میٹھا کھاؤ تم
پھر دوگانہ پڑھنے کو سیدھے مصلی جاؤ تم

वाँ दोगाना पढ़ के फिर ख़ुत्बों को सुन्ना चाहिए
फिर मुबारक बाद वां आपस में कहना चाहिए

واں دوگانہ پڑھ کے پھر خطبوں کو سننا چاہیے
پھر مبارکباد آپس میں واں کہنا چاہیے

शुक्र रब का हम करें कि ईद का मौक़ा दिया
ईद के दिन भाईयों से मिलने का मौक़ा दिया

شکر رب کا ہم کریں کہ عید کا موقع دیا
عید کے دن بھائیوں سے ملنے کا موقع دیا

रहमतें प्यारे नबी पर और कसरत से सलाम
पढ़ने का मौक़ा इनायत कर मुझे रब्बे अनाम

رحمتیں پیارے نبی پر اور کثرت سے سلام
پڑھنے کا موقع عنایت کر مجھے ربِّ انام